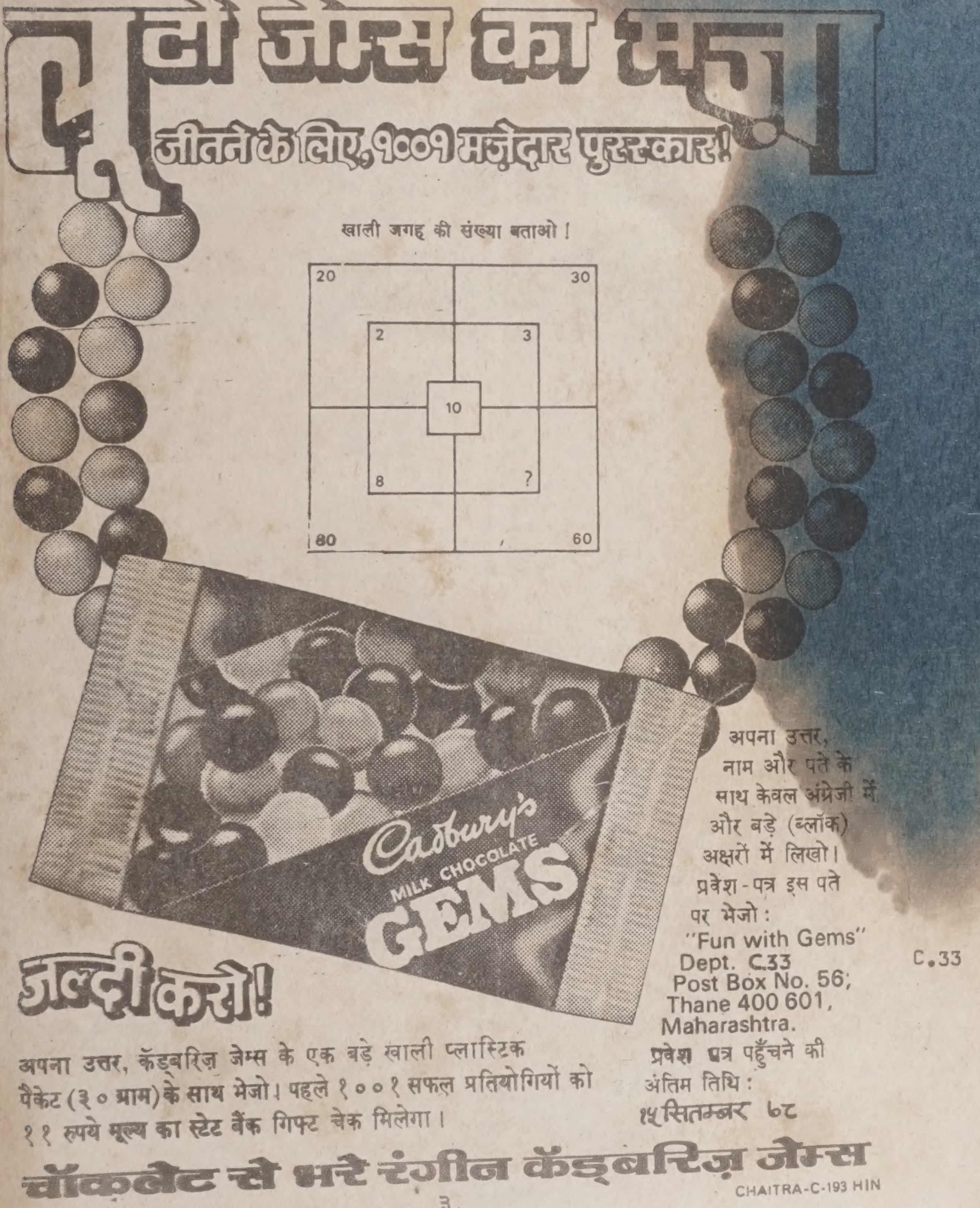


दूनी जेम्स का मज़ा
जीतने के लिए, १००१ मज़ेदार पुरस्कार!
खाली जगह की संख्या बताओ !
20
30
2
3
10
8
?
80
60
Cadbury's
MILK CHOCOLATE
GEMS
अपना उत्तर, नाम और पते के साथ केवल अंग्रेजी में और बड़े (ब्लॉक) अक्षरों में लिखो। प्रवेश-पत्र इस पते पर भेजो :
"Fun with Gems"
Dept. C.33
Post Box No. 56;
Thane 400 601,
Maharashtra.
प्रवेश पत्र पहुँचने की अंतिम तिथि :
१५ सितम्बर ७८
C.33
जल्दी करो!
अपना उत्तर, कॅडबरिज़ जेम्स के एक बड़े खाली प्लास्टिक पैकेट (३० ग्राम) के साथ भेजो। पहले १००१ सफल प्रतियोगियों को ११ रुपये मूल्य का स्टेट बैंक गिफ्ट चेक मिलेगा।
चॉकलेट से भरे रंगीन कॅडबरिज़ जेम्स
CHAITRA-C-193 HIN

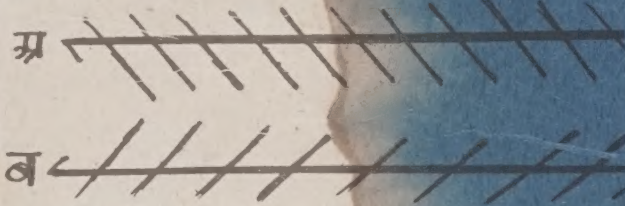
नजर का धोखा

इस चित्र को ध्यान से देखें कभी चार तीर नजर आयेंगे, कभी चार टी जो बीच में मिलते हैं और कभी बीच में क्रॉस वाला सितारा—



आंखों पर भरोसा मत कर

क्या आप मान सकते हैं कि अ तथा ब रेखायें समानान्तर हैं ? नापकर देख लीजिये ।



दीवाना निकालिये पहेलियां

पुरस्कार जीतिये

१. विषैले में से रंग निकालिये तो आग में झुलसे मिलेंगे ।
२. डरावने में से जहाज निकालिये तो एकदम लौ प्रकट हो जायेगी ।
३. शहर में से औरत को निकाल दीजिये आपको सफर का साधन मिल जायेगा ।

उत्तर

१. ज-हरी-ले २. भ-यान-क ३. ब-नार-स

पथिक प्यासा क्यों

टाइप प्रतियोगिता

पिलपिल अपनों में अजनबी-सा क्यों
सिलबिल हमको लगा बुरा सा क्यों

हिला न था ।

दीवाना-कैमल

रंग प्रतियोगिता निःशुल्क प्रवेश

पुरस्कार जीतिए:

कैमल–पहला इनाम ३० रु.
कैमल–दूसरा इनाम २० रु.
कैमल–तीसरा इनाम १० रु.
कैमल–आश्वासन इनाम ५
दीवाना-आश्वासन इनाम ५
कैमल–सर्टिफिकेट १०



केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगितामें शामील हो सकते हैं। उपर दिये गये चित्रमें अपने मनचाहे कैमल रंग भर दिजिए। अपने रंगीन प्रवेश-पत्र नीचे दिये गए पत्ते पर भेजिए, दीवाना, ८-बी, बहादूर शहा जाफर मार्ग, नयी दिल्ली १.१० ००२
परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्रव्यवहार, नहीं किया जाएगा।

नाम .... उम्र ....

पता ....

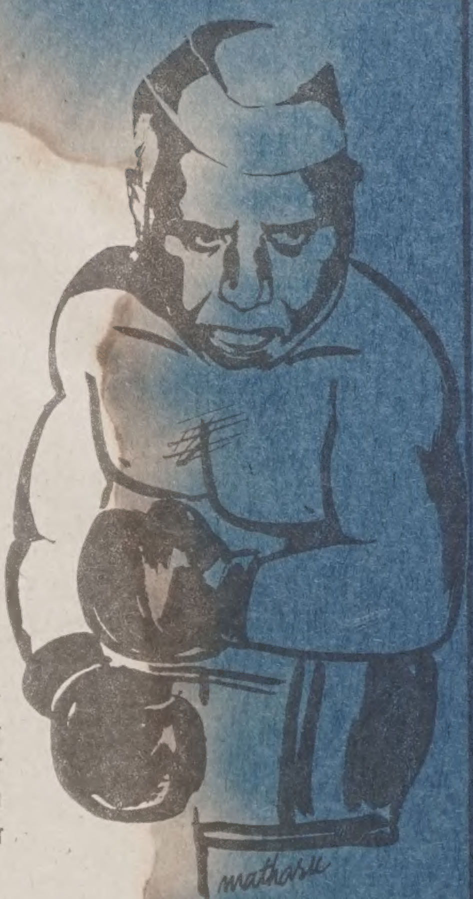
....

कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जाये।
चित्र भेजने की अंतिम तारीख: २५-६-७८

CONTEST NO.4

VISION

प्रेम पत्र



प्यारे दोस्त यशवन्त राव चव्हाण जी महाराज

सादर प्रणाम !

आपका नाम लेकर बहुत-सी मातायें अपने बच्चों को डरा देती हैं क्योंकि आपका नाम छत्रपति शिवाजी से जुड़ा हुआ है। यही नहीं, जनता पार्टी के लोक सभा के सदस्य भी आपका नाम लेकर एक-दूसरे को डरा देते हैं।

पिछले दिनों आपने शरद पंवार को महाराष्ट्र में जो "पावर" दिलवादी इससे यह साबित हो गया कि आपका सूरज भारत के पश्चिम से निकलता है। लेकिन इसके साथ-साथ इस बात का डर भी हो गया कि सूर्य पश्चिम से निकल-कर कहीं पश्चिम में ही न छिप जाये।

मैंने सुना है कि आपकी पुरानी कांग्रेस में बहुत से मनचले ऐसे आ गये हैं जो इन्दिरा जी की बढ़ती हुई ताकत में हिस्सेदार बनना चाहते हैं। इसलिये उन्होंने राज्य-सभा में इन्दिरा कांग्रेस का साथ दिया, हालांकि आपका निर्देश इसके खिलाफ था।

मैं यह जानता हूँ कि आप छोटे-मोटे खिलाड़ी नहीं हैं लेकिन अब कांग्रेस और भारत के लोग आपको हैवी वेट पहलवान मानने को तैयार नहीं। इसलिये आपकी सेवा में यह सुझाव रखना चाहता हूं। हो सके तो मोरार जी भाई की तेल-मालिश कम कीजिये वरना आप फिसल कर राजनीति में अकेले रह जायेंगे।

आपका

चितली

मुख पृष्ठ पर

पांच फुट से कम नहीं नाप सके तो नाप
चिल्ली दाढ़ी देखकर मुस्कायें आप ही आप।
मुस्कायें आप ही आप अचरज में पड़ गया याड़ी,
जितनी लम्बी चादर ये उतनी लम्बी दाढ़ी॥



दीवाना

अंक : २८, १७ अगस्त से २३ अगस्त १६७८ तक

वर्ष : १४

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

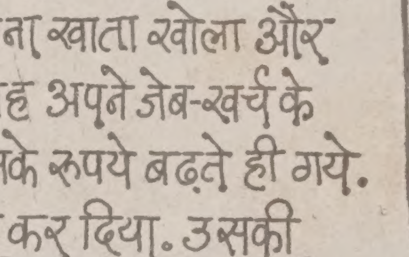
चन्दें
छमाहीः २५ रु०
वार्षिकः ४८ रु०
द्विवार्षिकः ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्र-मिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिए पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

जुड़वाँ अशोक आशा भाई-बहन ने अपने जन्मदिन पर सबको दावत दी. उनकी माँ ने उनके लिए एक बड़ा सा केक बनाया और उसमें ६ मोमबत्तियाँ लगाईं. दावत में उनके सभी साथी आये. पापा ने हरेक को 10 रुपये और मम्मी ने 5 रुपये दिये. उनको बहुत सारे उपहार और रुपये व मिठाइयाँ मिलीं. अशोक ने उन रुपयों से ढेर सारी किताबें और एक खिलौना खरीदा. लेकिन आशा ने कहा कि वह अपने रुपये जमा करेगी. अशोक ने उसका मज़ाक उड़ाया. आशा अपने पापा के साथ स्टेट बैंक गई. उसने अपने रुपयों से अपना खाता खोला और उसको अपने नाम से एक पास बुक मिली. वह अपने जेब-खर्च के पैसे जमा करती रही. धीरे-धीरे उसके रुपये बढ़ते ही गये. अब अशोक ने उसका मज़ाक उड़ाना बन्द कर दिया. उसकी किताबें फट गईं, खिलौना टूट गया और मिठाइयाँ खत्म हो गयीं... अब उसके पास कुछ भी न बचा. अगली बार जेब-खर्च मिलने पर वह आशा के साथ स्टेट बैंक गया. अपनी पास बुक पाकर उसे बड़ी खुशी हुई. उसने कहा—"अब मैं अपने सारे पैसे खर्च नहीं करूंगा... मैं भी बचत करूँगा."

समाप्त



बच्चों, अशोक की तरह तुम भी अपने सारे पैसे खर्च मत किया करो. आशा की तरह बचत करो. अपने पापा या मम्मी से कहकर स्टेट बैंक में अपना खाता खुलवाओ और अपने पैसे बढ़ाओ.

स्टेट बैंक

CHAITRA-SBI-330 HIN

काका के कारतूस

प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के उत्तर काका हाथरसी के



दुष्यन्त जैन, अलवर (राजस्थान)

प्र० : क्या आप 'फिल्म ट्रस्ट आफ इण्डिया' के चेयरमैन हैं ?

उ० : बना दिये चेयर बिना, काका चेयरमैन,
जिम्मेदारी कुछ नहीं, अपनी मिस्टर जैन।

अशोक कुमार अतरेजा, दादरी (गाजियाबाद)

प्र० : मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण समय कौन सा होता है ?

उ० : मंत्री पद मिल जाय जब, इलेक्शन को जीत,
कल तक रखते दुश्मनी, आज बनें वे मीत।

मो० यूनिस, लोदी कटरा, पटना सिटी

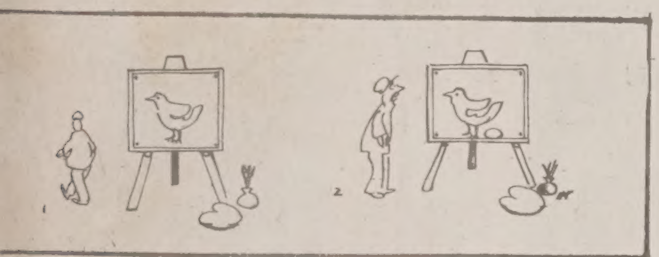
प्र० : काकी जी, आपके सिवा किसी और से भी प्रेम करती हैं ?

उ० : काका जी बूढ़े हुए, छुटा प्रेम का नेम,
पोती-पोते लूटते, अब काकी का प्रेम।

गाभाभाई, डबल आर बिल्डिंग, अहमदाबाद

प्र० : हसीनों की कमर खुदा ने पतली क्यों बनाई ?

उ० : पहिले पहुंची हसीना, तुम पहुंचे कुछ लेट,
उनको पतली कमर दी, तुमको मोटा पेट।



अशोक अग्रवाल, फारबिस गंज (बिहार)

प्र० : प्रेम और इश्क में क्या अंतर है ?

उ० : सत्य सात्विक प्रेम है, आशिक इश्क असत्य,
जैसे मंदिर में करे, हेमामालिनि नृत्य।

सुरेश कुमार खत्री 'चन्द्र', बीकानेर

प्र० : समय बदल रहा है, हर शै बदल रही है, आप क्यों नहीं बदले ?

उ० : एक रंग में रंग रहे, हास्य व्यंग्य के संग,
नेता दलबदलू बहुत, हम क्यों बदलें रंग।

नारायण सचदेव, इन्दौर

प्र० : पुरानी प्रेमिका से पीछा छुड़ाने का उपाय बताइए ?

उ० : इनसे बचने के लिए, शादी करलें आप,
नई-पुरानी प्रेमिका, भाग जायं चुपचाप।

सुरेश कुमार शुक्ला, इतवारी नागपुर

प्र० : प्रधान मंत्री द्वारा बारम्बार चेतावनी देने पर भी व्यापारी मूल्यों में कमी क्यों नहीं करते ?

उ० : लाभ-स्वार्थ में डूबकर, चला रहे व्यापार,
बिन डंडा, चलती नहीं कोई भी सरकार।



कमल कान्त जैन, माडल टाउन, दिल्ली

प्र० : ऐसी तरकीब बताइये कि प्रेमिका अपने आप खिंची हुई चली आए ?

उ० : प्रेमी अथवा प्रेमिका, भावे मन को जोइ,
करिए उसकी उपेक्षा, तब आकर्षित होइ।

चन्द्र कुमार जैन, जबलपुर

प्र० : बिना बेईमानी के व्यापार नहीं चलता, क्या यह सत्य है ?

उ० : स्थायी होता सदा, सत्य-सही व्यापार,
चार दिना ही चमकते, बेईमान-मक्कार।

लक्ष्मण प्रसाद माहेश्वरी—नई दिल्ली

प्र० : सरकार में कुछ निम्न श्रेणी के चमचे भी घुस गए हैं। उन्हें सफलता क्यों मिल रही है ?

प्र० : अपना-अपना भाग्य है, अपना-अपना भोग,
उच्चकोटि की सीट पर, निच्च कोटि के लोग।

वेद प्रकाश 'वेद', तिनसुकिया (असम)

प्र० : औरतें शव यात्रा में शामिल क्यों नहीं होतीं ?

उ० : शवयात्रा में नारि के जाने की नहिं रस्म,
कूद पड़ेगी चिता में, हो जाएगी भस्म।

पन्ना लाल 'प्रेमी', डिब्रूगढ़ (असम)

प्र० : इन्दिरा जी की गिरफ्तारी की अफवाहें जोरों पर हैं, क्या होगा काकू ?

उ० : चौधरी लाख बुरा चाहे, नहीं होता है,
मुरार जी को है जो मंजूर वही होता है।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

काका के कारतूस
दीवाना
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

स्वतंत्रता दिवस

की पूर्व संध्या पर फिल्मी सितारों द्वारा दीवाना के पाठकों के नाम संदेश



हमें भारत में क्रांति लानी है। आप सब अपना नाम बदल कर भारत रख लें और बहनें अपना नाम क्रांति रखें।



चन्द्रमा के चेहरे पर दाग है, भारत माता के चेहरे पर भी ग़रीबी का दाग है फिर भी हमें भारत माता से प्यार है। क्यों ? यह जानने के लिये सत्यम् शिवम् सुन्दरम् जरूर देखिये। यही मेरा सन्देश है।



संदेश वही जो पिया मन भावे।



निर्भय बनो—नकली मूंछें लगा कर 'ए' सर्टिफिकेट वाली फिल्में देखो।



खेद है कि स्वतंत्र भारत में कई वर्गों के लोग अब तक दबे हुए हैं—जैसे मोटे लोगों का मजाक उड़ाया जाता है। मोटों के लिये नौकरियों में स्थान सुरक्षित होने चाहियें, जैसे हरिजनों के लिये होते हैं और मोटे लोगों पर हंसने वालों पर भी ऐसे ही कानून लागू हों जैसे छूआछूत बरतने वालों पर।



कठिन संघर्ष के बाद मिली आजादी की हमें ऐसे ही रक्षा करनी है जैसे हम टैक्स वालों से अपनी ब्लेकमनी की करते हैं।



आदमी जन्म से ही बुरा नहीं होता हालात उसे ऐसा बना देते हैं। इस लिए हमें बुरा कर्म करने वालों नफरत नहीं करनी चाहिये। स विलेनों से रोमांस लड़ाना चाहिए।



हमें अपने देश की समस्याओं, एक नहीं सारि का हल जल्दी से जल्दी ढूंढ़ निकालना है।



एक दो तीन चार, देश का लगाओ बेड़ा पार।



हमारा देश ग़रीब नहीं है, यहां अमूल सम्पदा छिपी पड़ी है, उसे ढूंढ़ निका लना है। नये-नये खान खोदने होंगे हीरे की खान, लोहा खान, कोयल खान, तांबा खान, जस्ता खान, फिरो खान और संजय खान।



अच्छा, तो तुम ही हो वह फौज्जी जो रामगढ़ की रखछा के लिये आये हो। रामगढ़ से तुमको बेकारी और गरीबी को मार भगाना है हा, हा, हा, क्यों रे कालिया ?



बातें कम काम ज्यादा
पापड़ कम आम ज्यादा
रोल कम दाम ज्यादा
औकात कम नाम ज्यादा



जब तक देश की आबादी को काबू नहीं किया जाता तब तक देश प्रगति नहीं कर सकता। इसका एक ही उपाय है, विवाह की न्यूनतम आयु पचास वर्ष कर दी जाये।



आज हमारा ईश्वर पर से विश्वास उठता जा रहा है। सब नाखुदाई की तरफ बढ़ रहे हैं, यह बुरी बात है। हम सबको अपने-अपने धर्म से चिपके रहना चाहिये।



हमें अपने नेताओं द्वारा बताये ऊंचे आदर्शों पर चलना होगा। (अमिताभ का संदेश बहुत लम्बा था इसलिये हमने सेंसर कर दिया।)



पैदा इन इण्डिया, लव इन कनाडा नौकरी इन इंगलैंड, क्रिया कर्म इन फगवाड़ा।



हमारी शोभा भारतीय संस्कृति से है।



हमें संविधान में संशोधन करके सबको गाने का हक दिलाना होगा। तभी देश तरक्की करेगा।



हमारे देश में समस्याओं की बाढ़ है। आप सबको पहले उसमें तैरने का अभ्यास करना होगा। फिर सबके लिये स्टार बनने का रास्ता खुल जायेगा।



अमित जी ने आपको जो कुछ संदेश दिया है उसका मैं पूरा समर्थन करती हूं।



हमें सावधान रहना होगा, कहीं हमारी आजादी अनजाने में न छिन जाये।



देश के करोड़ों गरीबों के पास सिर ढंकने की जगह नहीं है। हम सबको मिल कर ऐसी हालत पैदा करनी होगी कि सबके पास कम से कम एक-एक घरौंदा हो, ब्रेकफास्ट में अमोल मक्खन जरूर मिले।

धारावाहिक उपन्यास

दूसरी आत्मा

भाग ५

लेखक-संगीता

दशरथ को बम्बई में एक कम्पनी में इंजीनियर की नौकरी मिली थी। उसे रहने के लिये कम्पनी के मैनेजर ने अपनी कोठी 'रचना सदन' बहुत ही थोड़े किराये पर दे दी थी। वह कोठी वर्षों से खाली पड़ी थी। पास-पड़ौस के लोगों का कहना था कि उसमें कोई प्रेतात्मा रहती है जो रात को सिसकियां भरती है और दशरथ-दशरथ पुकारती है। इस डर से उस कोठी में कोई नहीं आता था।

जब दशरथ कोठी में दाखिल हुआ तो लोगों ने उसे भी प्रेतात्मा वाली बात बताई। लेकिन दशरथ हिम्मत करके उसमें रहने लगा। दशरथ ने जैसे ही अपना सामान रखा एक लड़की वहां आई और उसने बताया कि मुझे मेरी बहन ने जो मैनेजर साहब के यहां काम करती है, आपके यहां घर का काम करने के लिये भेजा है। उसने वर्षों से गन्दी पड़ी कोठी को मिन्टों में साफ कर दिया तो दशरथ को बड़ा आश्चर्य हुआ। एक दिन वह प्रेतात्मा दशरथ के सामने आई और उसे पिछले जन्म की कहानी सुनाने लगी।

आगे पढ़िये

'तुम ठीक कहती हो बहन···मैं वास्तव में भूल पर थी···भावना के प्रवाह में बहकर मैं वह पाप करने जा रही थी जिससे मुझे कभी छुटकारा न मिलता—तुमने सचमुच मेरी आँखें खोल दी हैं।'

रूपा की आंखें खुशी से चमक उठीं और वह लड़की का कन्धा थपथपा कर बोली—

'जाओ बहन···आज से बल्कि इसी समय से अपने मन में होने वाले पति की छवि बसा लो और एक नया जीवन आरम्भ करो।'

'तुम सचमुच देवी हो बहन।'

लड़की रूपा से लिपट गई।

थोड़ी देर बाद लड़की वापस अपनी गली में चली गई—रूपा और रचना कार में सवार हो गई और कार चल पड़ी—रचना ने कार चलाते-चलाते कहा—

'तूने तो कमाल कर दिया रूपा··· बिल्कुल एक जादूगरनी के समान इस लड़की की विचारधारा ही बदल दी।'

'तू स्वयं सोच रचना! वह कितनी बड़ी मूर्खता करने जा रही थी···मेरी समझ में नहीं आता कि हर लड़की जानती है कि एक न एक दिन उसकी शादी जरूर होती है और उसे किसी न किसी की धर्मपत्नी बनना है तो फिर वह शादी से पहले क्यों प्यार करती है? जो प्यार का खजाना वह शादी से पहले लुटा देती है उसका अधिकारी तो उसका पति होता है···सो यह एक प्रकार का विश्वासघात है—वही प्यार का खजाना अगर अपने पति पर न्यौछावर करे तो दोनों का जीवन स्वर्ग न बन जाए!'

'तू ठीक कहती है रूपा···बिल्कुल ठीक कहती है।'

'अब यही देख ले कि मैंने शादी से पहले किसी को अपने निकट भी नहीं फटकने दिया···अपने मनोमस्तिष्क में किसी का विचार तक ठहरने नहीं दिया—और शादी के बाद मेरा जीवन कितना सुखमय है।'

'लेकिन यह तो जरूरी नहीं कि जिस पति के लिए तुमने वह खजाना संभालकर रखा है वह तुम्हें उतना ही प्यार दे सके··· उसने अपना ऐसा खजाना किसी और लड़की पर लुटा दिया हो···ऐसी मजबूरी भी हो सकती है कि शादी किसी और से हो और प्यार किसी और से—।'

'मैं कब कहती हूं कि ऐसी स्थिति उत्पन्न नहीं हो सकती···लेकिन जो पति दूसरी लड़की पर अपने प्यार का खजाना लुटा रहा है और उसे शादी किसी और से करनी पड़ी है तो वह कोई बहुत बड़ी विवशता होगी जिसने पति से उसकी प्रेमिका छीन ली।'

'यह तो स्पष्ट है।'

'और वह पति यह भी जानता होगा कि वह प्रेमिका अब उसे नहीं मिलेगी··· इसलिए अब अगर उसकी पत्नी ही उसकी प्रेमिका का स्थान लेने का प्रयत्न करे तो एक-न-एक दिन उसे अपने पति का प्या[र] मिल कर ही रहेगा···व्यर्थ के द्वेष से खींचा तानी बढ़ेगी और दोनों का जीवन कठिन हो जाएगा।'

'और अगर पति को अपनी ओर आक[र्]षित करने का उसका प्रयास विफल हो जाए तो?'

'यह नहीं हो सकता रचना···ह[र] लड़की को अपने पति का प्यार अवश्य मिलत[ा] है···अगर जल्दी नहीं तो देर से सही—प[र] मिलेगा जरूर।'

'देर से क्या अभिप्राय है तेरा? क्या जीवन भर?'

'जीवन भर तो क्या···सच्चा प्या[र] करने वाली पत्नी तो पति का प्यार पाने [के] लिए अगले जन्म की राह भी देख सकत[ी] है।'

रचना कुछ न बोली···थोड़ी देर बा[द] रूपा का घर आ गया उसने रूपा को उ[तार] दिया···कार फिर सड़क पर दौड़ने लगी··· उसके कानों में लगातार रूपा की आवा[ज] गूँजती रही थी···वह सोचती रही, क्या सचमुच पति इतनी प्रिय चीज है? पति [के] विचार आते ही न जाने क्यों उसके मन [में] बार-बार दशरथ की कल्पना उभर आत[ी] थी—उसने दृढ़ता से अपना सिर झटक क[र] सोचा···नहीं···यह नहीं हो सकता···शादी [से] पहले मेरे मन में किसी विशेष व्यक्ति [की] छवि नहीं बस सकती—मैं शादी के बाद ह[ी] अपने प्यार का खजाना अपने पति प[र] लुटाऊंगी—और फिर जिस प्रकार रूपा क[ा] जीवन सुखी और प्रेम-भरा गुजरा है उस[ी] प्रकार मेरे जीवन में भी सुख और प्रे[म] होगा।

पति की कल्पना ही से न जाने क्य[ों] उसके मस्तिष्क में चींटिया सी रेंगने लगीं··· पूरे शरीर में मीठी-मीठी गुदगुदी-सी भ[र]

गई ।

थोड़ी देर बाद रचना की कार कोठी के कम्पाउण्ड में पहुंची । उसका दिल धक से रह गया । पोर्टिको में उनके फैमिली डाक्टर मिस्टर सिन्हा की कार खड़ी थी—सिन्हा साहब की कार इतनी रात गए क्यों ? हे भगवान् ! डैडी की तबीयत ठीक हो ।

रचना ने अपनी कार रोकी और किसी-न-किसी प्रकार कार से उतर कर बरामदे में पहुंची···बरामदे ही में उसे सिन्हा साहब दिखाई दे गए । रचना ने घबराई हुई आवाज में पूछा—

'अंकल···क्या बात है अंकल ?'

'तुम आ गई बेटी—' डाक्टर सिन्हा ने कहा, 'ठाकुर साहब को दिल का दौरा पड़ा था ।'

'दिल का दौरा !' रचना का पूरा शरीर कांप कर रह गया ।

'हाँ बेटी···यह दूसरा अटैक है—उन्हें आराम की बहुत आवश्यकता है ।'

'अंकल कोई खतरे की बात तो नहीं ?'

भगवान् पर भरोसा रखो बेटी···वह सब कुछ ही अच्छा करता है ।' डाक्टर सिन्हा ने रचना का कंधा थपथपाया और बोले, 'रात को किसी भी समय मेरी आवश्यकता पड़े तो बुला लेना फोन द्वारा ।'

डाक्टर सिन्हा यह कह कर चले गए और रचना सन्नाटे में खड़ी रही—फिर वह पलट कर तेजी से अन्दर की ओर झपटी और ठाकुर साहब के कमरे की ओर बढ़ी—ठाकुर साहब अपने कमरे में बिल्कुल चित पड़े थे । उनके पास ही ज्वाला प्रसाद बैठे थे—रचना पर दृष्टि पड़ते ही ज्वाला प्रसाद ने फुर्ती से होंठों पर उंगली रख कर रचना को सम्भलने का संकेत किया । रचना ने अपने आपको बहुत सम्भाला···होंठ भींच कर आँसू रोके और ठाकुर साहब के बिस्तर के पास पहुँच गई ।

ठाकुर साहब ने रचना की ओर देखा और उनके होंठों पर मुस्कराहट फैल गई और वह बहुत निर्बल स्वर में बोले—

'रचना बेटी···तुम आ गई ।'

'डैडी—।'

रचना ने ठाकुर साहब की पट्टी पर बैठ कर उनका हाथ अपने हाथों में ले लिया और ठाकुर साहब ने कहा···

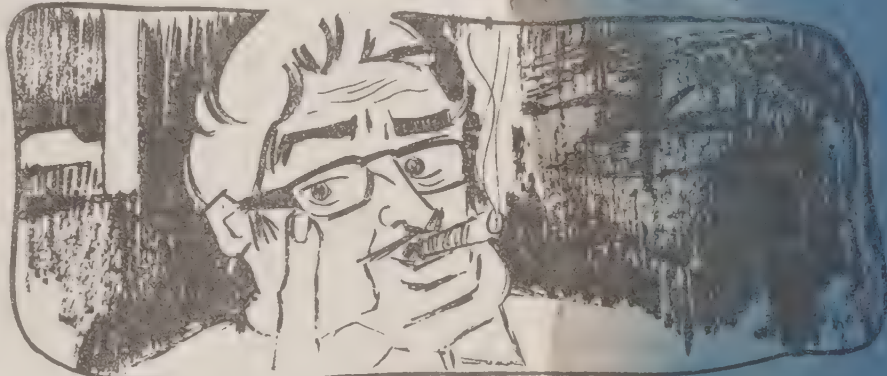
'अच्छा हुआ बेटी···तुम आ गई ।'

'डैडी—!' अभी-अभी मुझे डाक्टर अंकल मिले थे···मुझे घबराया हुआ देखकर हँसने लगे और बोले यह तो बहुत मामूली-सा अटैक है···आप बहुत जल्दी अच्छे हो जाएंगे ।'

ठाकुर साहब मुस्करा पड़े और बोले—

'तुम्हारा ड्रामा कैसा रहा बेटी ?'

'बहुत अच्छा हुआ डैडी···देखने वालों ने मेरी इतनी प्रशंसा की कि बस बता नहीं सकती ।



'क्या समय हुआ होगा ?'

'बारह बज रहे हैं डैडी ।'

'ओहो···अब तो तुम आराम करो बेटी ।'

'नहीं डैडी···मुझे अभी नींद नहीं आ रही ।'

'नींद नहीं आ रही या मेरे कारण से नहीं जाओगी ?'

'ओ···नो···डैडी···आप तो बिल्कुल ठीक हैं ।'

'तुम जाओ···आराम करो ।'

रचना का जी नहीं चाह रहा था कि डैडी के पास से इस समय हटे किन्तु फिर भी वह उठ कर चली गई···ठाकुर साहब उस दरवाजे को देखते रहे जिससे रचना गई थी—फिर उन्होंने ज्वाला प्रसाद की ओर देखा और बोले—

'ज्वाला प्रसाद जी—।'

'जी मालिक ।'

ज्वाला प्रसाद जल्दी से उठ कर ठाकुर साहब के बिस्तर के निकट आ गए । ठाकुर साहब ने बहुत धीमे से कहा—

'आपने देखा ज्वाला प्रसाद जी···मेरी रचना कितनी मासूम और भोली-भाली है ।'

जी मालिक···शरीफ बाप की औलाद है ना···शरीफ खून है उसकी धमनियों में ।'

'ज्वाला प्रसाद जी···मैंने रचना को उसकी मां की मौत के बाद बाप बन कर ही नहीं बल्कि मां बन कर भी पाला है—उसे जरा-सी फांस भी चुभती है तो मेरी आत्मा में भाला चुभ जाता है ।'

'मैं जानता हूं मालिक ।'

'आप तो जानते हैं कि अब रचना जवान हो चुकी है···कितने बड़े-बड़े घरानों से उसके लिए रिश्ते आ चुके हैं···किन्तु मैं उसका हाथ किसी बड़े या अमीर घराने के बेटे के हाथ में नहीं देना चाहता ।'

'क्यों मालिक ?'

'ज्वाला प्रसाद जी···बड़े घरों के बिगड़े हुए लड़के बहुत कम अपनी पत्नी के वफादार निकलते हैं···मैंने ऐसे बहुत सारे केस देखे हैं···इसलिए मैं चाहता हूं कि मैं अपनी रचना का हाथ किसी गरीब लेकिन शरीफ लड़के के हाथ में देकर आंखें बन्द करूं ।

ज्वाला प्रसाद की आंखों में चमक आ गई थी—वह जल्दी से आगे बढ़ते हुए बोले—

'आपका विचार ठीक है मालिक···छोटी मालकिन जिसकी भी अर्धांगिनी बन जायेंगी वह तो आप ही लखपति बन जाएगा—उसे किस बात का अभाव रहेगा ?'

'आप तो हमारे बहुत पुराने स्वामिभक्त हैं । ज्वाला प्रसाद जी ।'

'मालिक ही के टुकड़ों पर जीता हूं ।'

'आपका भी तो एक बेटा है ?'

'जी हाँ मालिक···' ज्वाला प्रसाद जल्दी से हाथ मलते हुए बोले, 'अब तो वह भी जवान है—एम० ए० में पढ़ रहा है—बड़ा सुन्दर निकला है जवान होकर ।'

'ज्वाला प्रसाद जी···अगर हम अपनी बेटी के लिए आपके बेटे का हाथ मांगें तो आपको कोई आपत्ति तो नहीं होगी ?'

ज्वाला प्रसाद हड़बड़ा कर खड़े हो गए

(शेष पृष्ठ ३७ पर)


पिछले अंक में आपने पढ़ा कि बम्बई के मशहूर कला विक्रेता झवेरी सिलबिल पिलपिल के पास एक केस लेकर आते हैं। पिलपिल आजकल गांव में फसल का काम देख रहा है, अतः मामला सिलबिल व रूबी के सुपुर्द है झवेरी की दुकान से उनका एक सेल्ज़ मैन मीरचन्दानी दो वर्ष पूर्व एक बहुमूल्य पेन्टिंग ले उड़ता है और दिल्ली आकर मरने से पहले उस पेन्टिंग को कहीं छिपा देता है झवेरी के लिये सात तोतों की एक पहेली छोड़ जाता है। तोतों को सिखाये बोलों को क्रम में रख पहेली ठीक तरह समझने पर उस पेन्टिंग तक पहुंचा जा सकता है। झवेरी को दिल्ली के एक कुम्हार से आकर
वह सात तोते खरीदने होते हैं लेकिन झवेरी के आने से पहले कुम्हार तोते बेच देता है। बड़ी मुश्किल से झवेरी उनमें से तोते ढूंढ़ने में कामयाब हो जाता है। पांचवा तोता भी बाद मिल जाता है। इस बीच मशहूर आर्ट चोर नटवर लाल को पेन्टि की गंध लग जाती है। वह भी पीछे लग जाता है। झवेरी तोत के कोड का हल करने का काम ए-वन जासूस कम्पनी को सौंप है उसी दौरान पता लगता है कि बाकी के दो तोते वास्तव में म चुके हैं। उन्हें बिल्ली खा गई थी। पहले मिले चार तोते नटव उड़ाने में सफल हो जाता है।
अब शायद हम तोतों का कोड हल नहीं कर पायेंगे। नटवर के चार तोतों के उड़ाने से कोई फर्क नहीं पड़ता। हम जानते हैं कि वे तोते क्या बोलते हैं और पांचवा तोता कालिया तो हमारे कब्जे में है ही।
नाम रखे हैं तोतों के उसने ... दास कबीर, कालिया, अर्जुन और कैप्टन किशोर बड़ा अजीब ... था। बाकी जो दो तोते मर चुके हैं उनके नाम भी बड़े अजीब हैं।
एक का नाम है इन्सपेक्टर ईगल. हो हो हो हो! कभी किसी ने सुना है ऐसा नाम किसी तोते का इन्सपेक्टर ईSSSगल।
इन्सपेक्टर ईगल हा हा हा हा. हवलदार रामसिंह तुम्हें पता है तीन बुलाओ तो तेरह जरूर आते हैं?
शSSSS. यह कालिया क्या कह रहा है? उस मरे तोते को सिखाये गये डायलाग तो नहीं बोल रहा है? लेकिन यह कैसे हो सकता है? एक बार और ट्राई करते हैं इन्सपेक्टर ईगल!
इन्सपेक्टर ईगल हा हा हा हा. हवलदार रामसिंह तुम्हें पता है तीन बुलाओ तो तेरह जरूर आते हैं।
यह इन्सपेक्टर ईगल को सिखाये गये डायलॉग ही बोल रहा है? लेकिन इसे कैसे पता लगा? हो सकता है यह तोता जोकर हो. सब दूसरे तोतों के डायलॉगों की नकल उतारता हो
याद है आपको कुम्हार ने क्या कहा था। यह तोता कालिया मीरचंदानी के पास पहले से ही था. बाकी के छः तोते वह बाद में खरीदकर लाया था यह भी उसने बताया था कि कालिया बहुत तेज है जब मीरचंदानी दूसरे तोतों को उनके डायलॉग रटाया करते थे तो यह उसके कंधे पर बैठा रहता था। वहीं से उसको सबके डायलॉग याद हो गये होंगे


आखिरी तोते फटमुँहे का डायलॉग भी इसे जरूर याद होगा उसको पुचकार कर मैं पूछती हूं। कालिये जरा बताओ तो फटमुँहा तोता क्या कहा करता था? मैं तुम्हें लाल मिर्च खिलाऊंगी मुँह खोलो बोलो फटमुँहा!
मैं किसी को घास नहीं डालता। हमेशा याद रखो जिसकी लाठी उसकी मैंस।
जिसकी लाठी उसकी मैंस।
अब हमारे पास सातों तोतों द्वारा बोले गये डायलॉग हैं। हम की सहायता से कोड को तोड़ना है। लेकिन इससे भी री यह है कि हम कालिया को गोली खिला दें जिससे यह सप्ताह कुछ बोल न सके। क्योंकि अगर कालिया आठ नटवर के हाथ में पड़ गया तो हो सकता है वह पहेली ह पहले हल कर डाले और पेन्टिंग को हथिया ले।
नटवर के हाथ यह तोता किसी कीमत पर नहीं लगना चाहिए। वर्ना सत्यानाश हो जायेगा।
अब पहेली यह है।
1 छुन छुन छु की बकरियां गुम हो गई हैं। पता नहीं कहां ढूंढे वह! इन्सपेक्टर ईगल से मिलो।
2 घो घोबी का कुत्ता न घर का का न घाट का।
3 मैं हूं जनरल कालिया हा हा हा, मैंने अपना खजाना वहां गाढ़ा है जहां मौत पहरा देती है। यो हो हो हो साथ में एक बोतल रम भी।
4 मैंने तीर छोड़ा टैस्ट के लिये, वह सौ गज पश्चिम की ओर जा गिरा।
5 इन्सपेक्टर ईगल हा हा हा हा, हवलदार राम सिंह तुम्हें पता है तीन बुलाओ तो तेरह जरूर आते हैं।
6 हड्डियों से आगे पत्थरों के नीचे बिन ताले के बक्स की तलाश करो।
7 मैं किसी को घास नहीं डालता हमेशा याद रखो जिसकी लाठी उसकी मैंस।
पहले तोते का संकेत सीधा सा है। पेन्टिंग बकरियां चराती लड़की का है। अतः मतलब साफ है कि वह पेन्टिंग गुम हो गई है। झवेरी को पता नहीं लग रहा कि वह पेन्टिंग कहां ढूंढे। इन्सपेक्टर ईगल से मिलो का क्या मतलब हो सकता है?
विविध भारती पर हर रविवार को ईगल वैक्यूम फ्लास्क का प्रायोजित कार्यक्रम सुनो, कहता होगा।
शायद कह रहा हो समझ में नहीं आता तो किसी जासूस से मिलो। वह तो झवेरी कर ही चुके हैं।
ए-वन जासूसों से मिल चुके हैं।
दूसरा तोता दास कबीर है जो तुतला कर बोलता है। आज तक मैंने तो सुना नहीं कि तोता तुतला कर बोल सकता है। पक्षी विशेषज्ञ डाक्टर नरीमन से पूछ कर देखती हूं कि क्या तोता तुतला कर बोल सकता है?
अजीब-अजीब बातें हो रही हैं।
डाक्टर नरीमन ने साफ-साफ कहा है कि तोता तुतला नहीं सकता, जब तक कि उसे तुतला कर बोलने की ट्रेनिंग न दी गई हो। दास कबीर को तुतला कर डायलॉग बोलने की ट्रेनिंग विशेषरूप से दी गई है। यह सूत्र बहुत महत्वपूर्ण हो सकता है।
कालिए, दास कबीर के बोल बोलो। अगर अब तक गोली का असर नहीं हुआ है तो... दास कबीर।
घो घो घोबी का कुत्ता न घर का का न घाट का।
शाबाश!


ध्यान से सुनो तो कई बातों का पता लगता है। धोबी कहते हुये यह 'धो' पर ज्यादा ज़ोर नहीं देता लगता है, जैसे कह रहा हो दोबी और 'न घर' का कहते हुये 'घ' पर भी ज़ोर नहीं देता 'गर' कहता है। अगर हम इस सूत्र को तोड़ पाते हैं तो हमारा काम काफी आसान हो जाता है।
इसके लिये आप अपनी टेबल पर बैठ जाइये। मैं होटल वाले को काफी का आर्डर दे देता हूं। दिमाग ताजा हो जायेगा।
काफी माथा पच्ची के बाद कुछ-कुछ जो मेरी समझ में आया वह यह है। डायलॉग में जहां-जहां तोता तुतलाता है वह भाग ही कोड के अंग हैं, पहले तोता धोबी कहते तुतलाता है दो दो दो बी कहता है। इसे इस प्रकार भी लिखा जा सकता है, '२२२बी' यह किसी मकान का नम्बर हो सकता है। आगे न घर का का कहते तुतलाता है। यह कुछ ऐसे लगता है 'नगर काका' क्या समझे?
२२२ बी काका नगर?
काका नगर में यह देखो सचमुच ही २२२ बी नम्बर का मकान है।
ठीक है अब आगे अर्जुन तोते का डायलॉग है। मैंने पश्चिम की ओर तीर मारा सौ गज दूर जा गिरा। यहां से सौ गज पश्चिम की ओर नाप कर देखना चाहिये।
222 B
सौ गज पश्चिम की ओर तो यह कब्रिस्तान आ गया।
ठीक यही कब्रिस्तान है जहां मीरचंदानी ने पेन्टिंग छुपाया है। याद है कालिया क्या कहता है? मैंने अपना खजाना वहां गाढ़ा है जहां मौत पहरा देती है। कब्रिस्तान के इलावा मौत और कहां पहरा देगी।
अन्दर चलना पड़ेगा?
आगे इन्सपेक्टर ईगल कहते हैं कि तीन बुलाओ तो तेरह जरूर आते हैं। यह देखो। यही होगा इस कोड पर लिखा है यहां तीन कॉल ड्राप दफन हैं। तीन बुलाओ ठीक अर्थ है।
और तीन बुलाओ तो तेरह जरूर आते और सचमुच दस कदम आगे की कब्र पर देखो क्या लिखा है 'यहां तेरह अज्ञात सैनिक दफन हैं।
यहां से आगे की दीवार टूटी पड़ी है, अगला तोता भी कहता है कि पत्थरों के नीचे बिन ताले के बक्से की तलाश करो। इन्हीं पत्थरों के नीचे वह पेन्टिंग दफन होनी चाहिए।



सिलबिल-पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये

आपके पत्र

दीवाना पत्रिका एक अच्छी पत्रिका है। इसमें अनेकों खूबियां हैं जिस प्रकार फूल में सुगन्ध होती है परन्तु वह दिखाई नहीं देती, सूंघने पर सुगन्ध का आभास होता है। उसी प्रकार दीवाना खूबियों का एक भण्डार है जैसे को पंचतंत्र मनुष्य को जीने का नया अन्दाज सिखलाता है। मेरा ख्याल है कि जो व्यक्ति भटके हुए हैं और उनमें कुछ सामाजिक बुराइयां हैं तो उनको चाहिए वह दीवाना पढ़ें, हमारा दावा है वह कुछ न कुछ अवश्य ही सुधरेंगे।

हामिद अली खां—शाहजहांपुर

दीवाना का ६ जुलाई का अंक प्राप्त हुआ पढ़ कर मजा आ गया। चिल्ली लीला, शतरंज के खंडारी, मसूरी को बचाओ, परोपकारी पढ़ कर हंसते-हसते पेट में बल पड़ गए। हास्य कथाएं भी हास्यप्रद रहीं, कृपया शीघ्र कोई नया उपन्यास शुरू करिए। इस बार बन्द करो बकवास पिछले अंक वाला ही था ऐसा क्यों? कृपया शीघ्र ही कोई चटपटा विशेषांक निकालें। हां, त्रिशूल, डान, देस परदेस, परमात्मा आदि फिल्मों की पैरोडी कब निकालेंगे आप? वैसे यह अंक बहुत अच्छा रहा, अतः बधाई।

आर. चन्द्र बी. एस.—जनौली

दीवाना का अंक २३ मिला। इस अंक में चिल्ली लीला, बन्द करो बकवास, सिलबिल और पिलपिल, मोटू पतलू, फैण्टम, मदहोश, पचतंत्र बहुत अच्छे लगे। लेकिन इस अंक में रंग भरो प्रतियोगिता न पाकर निराशा हुई। मेरी आपसे शिकायत है कि रंग भरो प्रतियोगिता में रंग भरने की जगह ज्यादा दिया करें तथा हर अंक में दें। लेकिन इस अंक में रंग भरो प्रतियोगिता के परिणाम में आपने चित्र क्यों नहीं छापे? आप फैण्टम बीच के दो पृष्ठों में तथा रंगीन छापा करें। इससे दो पृष्ठों को निकाल कर एक किताब बन सकती है। आप कभी विशेषांक क्यों नहीं निकालते? दीवाना के पृष्ठ ४४ से ५० कर दें।

विकास लूथरा—नई दिल्ली

दीवाना का नया अंक २२ मिला। बड़ी कहानी को छोड़ कर अन्य सामग्रियों को २ घंटे में पढ़ गया। चिल्ली लीला पसन्द आयी। अब चिल्ली से चौधरी चरण सिंह को पत्र लिखवायें। इस्तीफे के बाद चिल्ली क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करता है देखें। सितारों के नाम वस्तुओं के नाम आण्ड ठीक लगी। बन्द करो बकवास पढ़ कर तो मजा आ जाता है। सिलबिल-पिलपिल, मोटू-पतलू, छुट्टन-मिट्ठन, पचतंत्र काफी अच्छे लगते हैं। मदहोश तो कभी होश में रहता ही नहीं है। गर्मी पर एक नजर आपने ठीक लिखा है बिल्कुल यह वास्तविकता के परे है। सवाल यह है ठीक लगा। सब मिला कर यह कहा जाए दीवाना पत्रिका हंसी का और मनोरंजन का सबसे बढ़िया साधन है? कृपया इसे विज्ञापन पत्रिका नहीं बनायें इसकी जगह कोई हास्यात्मक कहानी चुटकले छापें। इस पत्रिका में सब ठीक है लेकिन प्रश्न काफी दिनों के बाद छपता है कृपया इस पर ध्यान दें मुझे फोटो भेजे तो करीब दो साल हो जायेंगे लेकिन अभी तक नहीं छपा।

किशन अग्रवाल—रांची



दीवाना अंक २२ के मुख पृष्ठ पर चित्रकार चिल्ली से भेंट हुई। उनके बनाये चित्र देख कर दिल प्रसन्नता से झूम उठा। किन्तु अन्दर जब उनकी लीला देखी तो कहकहे फूट पड़े। इस अंक में दीवाना पचत्तंत्र, बच्चा जमूरा और बन्द करो बकवास, बहुत ही अच्छे थे। मोटू-पतलू और पिलपिल-सिलबिल, ने भी मनोरंजन किया। वास्तव में दीवाना ही एक ऐसी हास्य पत्रिका है, जिसे हम हृदय से चाहते हैं। इस आशा में दीवाना के अगले अंक का इन्तजार है कि अगला अंक और रोचक होगा और हमारा अधिक से अधिक मनोरंजन करेगा।

अनिल कुमार गुप्ता—तपकरा (म० प्र०)

स्कूल से घर आया तो पता चला कि चिल्ली महोदय बास्केट बाल खेल रहे हैं। फटाफट न्यूज रील (चिल्ली लीला २२८) देखी। बहुत अच्छी लगी। मोटू-पतलू व सिलबिल-पिलपिल बहुत अच्छे लगे। दीवाना पचतंत्र व बच्चा जमूरा सराहनीय थे। दीवाना फ्रेंडस क्लब में अपनी व अपने दोस्तों (जगजीत सिंह) व (अशरफ अली) की फोटो देख कर बहुत खुशी हुई।

राजीव दत्त—मुरादाबाद

हर प्रकार से पूर्ण दीवाना का २३वां अंक मिला। इस अंक के अन्दर प्रेम-पत्र, चिल्ली-लीला, बन्द करो बकवास, मदहोश तथा मोटू-पतलू काफी रोचक लगे। फिक्र तौंसवी की कहानी 'मीर बीमार हुए' ने काफी हंसाया तथा परवीन बाबी से मुलाकात काफी पसन्द आई। कृपया यह बताने का कष्ट करें कि पत्र-मित्र स्तंभ के अन्दर अपना फोटो प्रकाशित कराने के लिए कितने दिनों तक इन्तजार करना पड़ता है कृपया हमारे शहर में दीवाना शीघ्र भिजवाने का प्रबन्ध अवश्य करें।

सुभाष गुप्ता—बुलन्दशहर

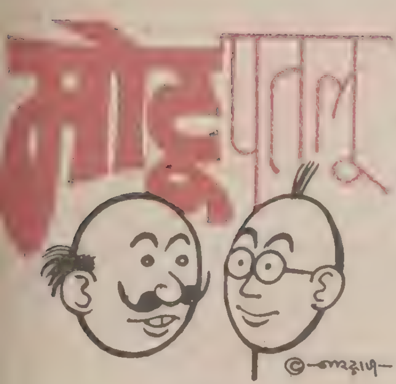
पत्र-मित्र के फोटो के लिये समय बताना असम्भव है। —सं०

मैं दीवाना की तारीफ करने के लिये अलफाज कहां से लाऊं, बस इतना कहना काफी है कि दीवाना पढ़ना एक किस्म की दवा है क्योंकि दीवाना पढ़ने से आदमी हंसता है और हंसने से आदमी की वर्जिश हो जाती है और वर्जिश करने वाला कभी बीमार नहीं होता। मुझे तो ये डर है कि कहीं मैं हंसते-हंसते मर ना जाऊं। मुझे उम्मीद है आप इसी तरह हंसा-हंसा कर हम लोगों के दुखों को दूर करते रहेंगे।

महमद रऊफ मेमन—महाराष्ट्र

अंक नं० २३ भी एक सप्ताह देर से आया हालांकि यह अंक तारीफ-ए-काबिल था। शतरंज के खंडारी बनाम शतरंज के खिलाड़ी, सिलबिल और पिलपिल, अच्छे रहे। फैण्टम की कॉमिक्स इस बार हास्य-युक्त थी। मीर बीमार हुए, के लेखक को बधाई।

राजकुमार—पटना



पिछले दिनो प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रोफेसर पोटैंटो ने एक ऐसा 'कम्प्यूटर मानव' बनाया था जो कभी समाप्त न होने वाली सोलर बैट्रियों की शक्ति से काम करता था प्रोफेसर पोटैंटो ने उसका नाम टुईंकल टुईंकल रखा था और प्रोफेसर का दावा था कि उसकी लैबोट्री में बना कम्प्यूटर मानव भगवान के कारखाने में बने असली मनुष्य से कहीं अधिक बुद्धिमान और शक्तिशाली है और वह हर काम साधारण मनुष्य से अधिक कुशलता से कर सकता है।

कम्प्युटर मानव टुईंकल को मोटू, पतलू अपने घर ले आये थे। प्रोफेसर पोटैंटो ने कम्प्यूटर मानव के कल पुर्जों की देखरेख के लिये उन्हें एक 'टूल किट' भी दी थी। 'टूल किट' के साथ एक नोटबुक थी, जिसमें कम्प्यूटर मानव को अपनी इच्छा के साथ चलाने, उससे काम लेने और उसकी आदतों के तरीके दिये गये थे। अब इस मशीनी युग में बने इस मशीनी आदमी का कमाल आगे देखिये।




हां, तभी तो मैं संसार के मनुष्यों से महान हूं।
पागलखाने जाने की स्थिती से आगे बढ़ चुके हो इसी लिये ऐसा कह रहे हो।
अब यह देखना है कि इस बात में सच्चाई कहां तक है। आज तक वैज्ञानिकों ने जितनी भी मशीनें बनाई हैं, उनसे सिद्ध किया है कि वे मनुष्य से अधिक अच्छी तरह काम कर सकती हैं। यह कम्प्यूटर मानव हमारा अंकल टुईकल भी भगवान के बनाये साधारण आदमी से अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ तो हम संसार के सभी लोगों को भाड़ में झोंक कर हर देश में यह मशीनी आदमी ही चालू कर देंगे।
सब आदमियों को हिन्दमहासागर में धक्का देकर मार दो। यह सिद्ध होने में अब देर थोड़ा ही लगेगी।
पहले से ही सबक
मार दें? दिमाग खराब हो गया है तेरा।
यह बहस बहुत करता है।
भगवान के बनाये आदमियों में भी जो सबसे अधिक बहस करे वह सबसे अधिक काबिल माना जाता है। इस हिसाब से तो यह ठीक ही कह रहा है कि मैं सबसे काबिल हूँ।
नहीं नहीं। किताब में देखो। इसकी बहस की आदत बन्द करवाने का क्या तरीका है।
देख ले। मैं तो इससे और काम ले रहा हूं।
कम्प्यूटर मानव की खराबी
टुईकल अंकल। जरा वह पंखा तो चला दो
पंखा चला दिया सर। पर इतनी गर्मी तो नहीं पड़ रही है। फिर आपने पंखा क्यों चलवाया है।
फिर बहस कर रहा है।
कम्प्यूटर मानव की खराबी
टुईकल अंकल, वह ट्रांजिस्टर तो उठाना।
अभी लाया सर। पर वहां क्या यह बुर लग रहा है
···बहस···बहस··· कहां लिखा है बहस के बारे मे
यह लीजिये सर ट्रांजिस्टर।
वैरीगुड। जो काम कहा, वह फटाफट कर दिया।
पर इसका करोगे क्या? इस समय कोई स्टेशन नहीं आ रहा है। तुम फजूल काम करवा रहे हो मुझसे।
बहस किये जा रहा है हर बात पर।
मिल गया, मिल गया। यह चैप्टर है इसकी बहस की आदत पर।
यह देखो! इसके दिमाग का पूरा सरकेट दिया हुआ है यह ट्रांजिस्टर हैं, कंडेंसर हैं, रिजिस्टेंस हैं और यह टियूनिं के ट्रिमर हैं। लिखा है, इसके सर के ऊपर वाला मेन बोल्ट खोलने पर तुम्हें अंदर यह 'सरकट' नजर आएगा यदि इ अधिक बहस की आदत हो तो 'टियूनिंग के ट्रीमर्ज' क कस कर इसकी टियूनिंग ठीक कर लो।



अरे क्या कर रहे हो ? मेरे दिमाग का कबाड़ा करोगे तुम ।
यह ठीक काम कर रहा है, तुम बेकार हो इसका दिमाग खोल रहे हो ।
नहीं, यह बहस अधिक करता है ।
यह रहे 'टियूनिंग के ट्रीमर ।' इन्हें पेचकस से कस दूं ?
मोटू-पतलू ने फिर कम्प्यूटर मानव के दिमाग का ढकना बन्द किया तो अब वह बिल्कुल मौन था ।
क्यों भई अंकल ! अब बहस तो नहीं करोगे ?
बिल्कुल चुप है । ऐसे खामोश हो गया है जैसे बिल्कुल ही राजनारायण बन गया है ।
इससे कोई काम कह कर देखो ।
जाओ, उस खिड़की के दरवाजे खोलो ।
उठ कर चल दिया । बिल्कुल ठीक काम कर रहा है । और बहस जरा भी नहीं की ।
कमाल हो गया बिगड़ा दिमाग ठीक कर दिया ।
हम तो इस कम्प्यूटर के पूरे मकैनिक बन गये हैं ।
पर दूसरे ही पल मोटू-पतलू यह देख कर दंग रह गये कि टुईंकल ने खिड़की के दरवाजे कैसे खोले हैं ।
खिड़की के दरवाजे चौखट मे खोलकर अलग कर दिये ! दरवाजे खोलने से हमारा यह मतलब था क्या ?
जी चाहता है, इस हालत पर अपना सर फोड़ लूं ।


सर फोड़ने के लिए यह हथौड़ा ले आया। तुम्हारी ही आज्ञा का पालन कर रहा है।
मैने गुस्से में जो बात कही वह क्या सचमुच की आज्ञा थी।
जो मैं कह रहा हूं, वह ध्यान से सुनो टुईंकल। और मुझ पानी पिलाओ।
पानी पिलाने के लिए टुईंकल ने मोटू का गला दबाया और उसके मुंह में पानी की नली दे दी।
पानी पिलाने का मतलब था गिलास से पानी पिलाओ। पूरा वाटर टैंक पेट में भरने को तो नहीं कहा था।
यह क्या चक्कर हो गया। पहले तो टुईंकल को जो काम कहो वह ठीक कर देता था।
पर बहस करता था। इसकी बहस की आदत ठीक की है तो यह हालत हुई है।
चलो नाश्ता कर लें। जरा किताब में देख कर बताना, नाश्ते में टुईंकल क्या पसंद करता है?
ढाई सौ ग्राम ग्रीस। आधा किलो गीयर आयल और एक किलो मोबिल आयल।
मोबिल आयल
ग्रीस
ग्रीस और मोबिल आयल से पहले इसका नाश्ता करा दो।
मोबिल आयल



क्यों माई डीयर लल्लू दी ग्रेट ! नाश्ता कैसा रहा ?
पूरा चरणसिंह बन गया है, जुबान बन्द रखने में तो यह ।
मजेदार रहा है । क्या शर्मिला टैगोर की तरह शर्मा रहा है और मुंह से कुछ नहीं बोल रहा है ।
लाओ, अब हम भी कुछ नाश्ता कर लें । मुझे चाय दो ।
हां, मुझे भी चाय डालो ।
दीवाना
और कम्प्यूटर मानव ने चाय की केतलियां मोटू-पतलू पर उलट दीं ।
अरे मैं मर गया । इस लोहे के कनस्तर का दिमाग तो बिल्कुल ही खराब हो गया है । चाय मुझे डालो का मतलब था चाय कप में डालो ।
अपने दिमाग से बिल्कुल काम नहीं लेता ।
यह पहले दीवाना में अर्थ-अनर्थ का कालम तो तैयार नहीं करता था ।
हां, लगता है यदि मैं इससे कहूं, मेरा आमलेट बना दो । तो यह मुझे फ्राईपैन में डाल कर आंच पर रख देगा ।
लो, वास्तव में यह फ्राईपैन ले आया तुम्हारा आमलेट बनाने के लिये ।
मैं बाज आया इस लोहे के कनस्तर से । मुझे जूते दो ! मैं तो घर से बाहर जा रहा हूं



इन कलाकारों से आगामी अंक में फिर मिलिये।


एक गर्मी की शान्त दोपहर में एक बड़ा पंछी पेड़ की खोह में बने अपने घोंसले में अपने एकमात्र बच्चे को दाना खिला रहा था। उसके ठीक ऊपर एक छोटी चिड़िया का घोंसला था।
देखो, कितनी शर्म की बात है कि इतना बड़ा पंछी होते हुए भी इसका एक ही बच्चा है।
मैं कितनी छोटी हूँ लेकिन मैंने एक दर्जन अंडे दिए हैं, जल्दी ही इनमें बच्चे निकलेंगे। मेरे इतने सारे बच्चे देख यह भाग्य पर शक करेगी।
कुछ दिनों के बाद जब बच्चे निकल आते हैं तो वह उनके लिये कीड़े लाती है। हर बार उसके आने पर घोंसले में भूचाल आता है।
बारह के बारह बच्चे कीड़े के लिए मुँह फाड़ते हैं। थोड़ा बड़ा होने पर धींगा मुश्ती भी करने लगते हैं।
एक बार जब एक दिन वर्षा आती है तो चिड़ी खाना नहीं ला पाती। दूसरे दिन वह पहला कीड़ा लाती है तो भूखे बच्चों में लड़ाई छिड़ जाती है। सब एक-दूसरे के ऊपर उछलने की कोशिश करते हैं।
पंचतंत्र
और इसी धक्का-मुक्की में घोंसला उखड़ कर उल्टा हो जाता है। पंख पूरे विकसित न होने के कारण सारे बच्चे गिर जाते हैं।
देख बेटा, बेचारी चिड़ी के सारे बच्चे गिर कर मर गये। बेचारी को अपने बारह बच्चों पर बड़ा नाज़ था। वही चीज उसे ले डूबी।
शिक्षा—छोटा परिवार सुखी परिवार। अधिक बच्चे दुर्भाग्य की निशानी हैं।

अरुणा ईरानी



अरुणा ईरानी



विजय भारद्वाज

अरुणा ईरानी का जन्म बम्बई में हुआ ।
हों‍ने अपना फिल्मी जीवन बाल भूमिका से
किया । इनकी प्रथम फिल्म थीं । 'गंगा
मना', जिसमें इन्होंने बाल भूमिका निभाई
। इसके बाद इन्होंने फिल्म 'पारसमणी'
व्यस्क भूमिका निभाई । इनकी इन दोनों
ल्मों ने ही बेशुमार प्रसिद्धि प्राप्त की ।
ज भी 'गंगा जमना' या 'पारसमणि' जहां
ीं भी लग जाती हैं, दर्शकों के झुंड के झुंड
ड़ पड़ते हैं ।

अरुणा ईरानी की सुन्दरता किसी
रोइन से कम नहीं है । इकहरा बदन, गोरा
और सुन्दर मुखड़े पर काला तिल जो
नजर लगने से बचाता रहता है । सुन्दर
ड़े पर मोती जैसे दांत जहां सुन्दरता को
चांद लगाते हैं, वहीं इनकी मोहक आंखें
यास ही दर्शकों का मन मोह लेती हैं ।
सी गहरी आंखों वाली अभिनेत्री
णा ईरानी बेहद खुश मिजाज हैं ।

इन्हें आज फिल्म उद्योग में प्रवेश किये
ग बीस वर्ष हो गये हैं । इस लम्बे काल
न्होंने संघर्ष भी किया है और ख्याति भी
की है । इनकी इन लोकप्रिय फिल्मों
र्शक आज भी याद करते हैं । 'उपकार',
'अनोखी रात', 'कारवां', 'बाम्बे टू गोवा',
'उलझन' और 'मिली' आदि ।

फिल्मों में आने से पूर्व इन्होंने गुजराती स्टेज पर भी काफी प्रसिद्धि प्राप्त की । यह स्टेज आर्टिस्ट पहले है और फिल्म आर्टिस्ट बाद में, यह कहना गलत न होगा । एक बाल भूमिका से हीरोइन तक का लम्बा सफर इन्होंने तय किया है । 'हंगामा' और 'बोम्बे टू गोवा' में यह नायिका बनी हैं । दोनों ही फिल्में हास्यप्रधान थीं और सफल रहीं ।

वैसे यह अधिकतर सह-नायिका वाले रोल करती रही हैं और कर भी रही हैं । यह कुशल नृत्यांगना भी हैं । एक लम्बे समय तक फिल्म उद्योग में महमूद और अरुणा ईरानी की जोड़ी 'हास्य जोड़ी' के रूप में चर्चित रही है ! आज भी इनके पास दर्जनों फिल्में हैं । यह व्यक्तिगत जीवन में इतनी मिलनसार हैं कि बस पूछो मत ! जो एक बार इनसे मिल लेता है, इनका होकर रह जाता है ! आप यदि बम्बई से दूर हैं तो पत्र व्यवहार करके ही देख लीजिये !

अरुणा ईरानी
सेठ मिनार, पेपर रोड
बम्बई—४०००२६

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

१७ अगस्त से २३ अगस्त ७८ तक

मेष : यह सप्ताह संघर्षपूर्ण-सा प्रतीत होगा, कुछ नई पुरानी समस्याएं भी बनती रहेंगी, धन के कामों या ऋण के कामों में परेशानी, कारोबार में यथार्थ लाभ, परिश्रम सफल, और आपकी अपनी योजनाएं सफल होंगी ।

वृष : दिलचस्प होने के साथ-साथ यह सप्ताह संघर्षपूर्ण भी रहेगा, कई तरह के परिवर्तन होते रहेंगे, किसी के मिलाप से खुशी होगी तो किसी के मिलाप से दिल परेशान हो जाएगा, खर्चा भी बढ़ेगा ।

मिथुन : यह सप्ताह आपको योजनाओं के विपरीत चलता महसूस होगा, आर्थिक चिन्ता एवं घर-परिवार की समस्याएं भी आती रहेंगी, कोई नजदीकी मित्र सहयोग देगा जिससे आप अपने काम चला सकेंगे ।

कर्क : बीते दिनों से यह सप्ताह अच्छा रहेगा, कुछ संघर्ष तो करना पड़ेगा परन्तु बाद में लाभ भी अच्छा होता रहेगा, प्रयास करने पर कुछ काम बन जाएंगे, व्यापार को सुधारने को कुछ नई योजनाएं भी बनेंगी ।

सिंह : कोई नई समस्या पैदा हो सकती है जिसके कारण कामकाज में भी रुकावट या परेशानी बन सकती है, परिश्रम अधिक, अचानक ही कोई भारी खर्च करना पड़ेगा, परिवार और मित्रों द्वारा साहस बढ़ेगा ।

कन्या : यह सप्ताह अच्छा भी है और कुछ संघर्षमय भी, कुछ कामों में सफलता मिलेगी तो कुछ कामों में निराशा का सामना करना पड़ेगा, कुछ नई योजनाएं सामने आएंगी परिवार से सुख एवं सहयोग मिलेगा ।

तुला : इन दिनों आपको परिश्रम काफी करना होगा जिसके कारण थकावट या कमजोरी महसूस होती रहेगी, आर्थिक लाभ अच्छा होगा और ठीक समय पर मिलता रहेगा, अच्छे लोगों की संगत से काम बनेंगे ।

वृश्चिक : आर्थिक दृष्टिकोण से देखें तो सप्ताह अच्छा रहेगा, विगत समय में किए कामों के परिणाम मिलने लगेंगे, रुके हुए धन की प्राप्ती होगी, कामकाज की व्यस्तता में भी काफी समय निकल जाएगा ।

धनु : इन दिनों आपके जीवन में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन आ सकते हैं, आर्थिक क्षेत्र में विकास होगा और धन सम्बन्धी चिन्ता भी दूर होती जावेगी, परिश्रम काफी करना होगा, घरेलू योजनाओं पर व्यय बढ़ेगा।

मकर : क्रोध जोश या जल्दबाजी में काम न करें वर्ना हानि हो सकती है, संघर्ष काफी करना पड़ेगा, प्रयास करने पर काम बन जाएंगे, यात्रा सफल रहेगी, दिलचस्प प्रोग्राम बनते रहेंगे, व्यय भी होगा ।

कुम्भ : इन दिनों शुभ अशुभ मिश्रित फलों की प्राप्ती होती रहेगी, कारोबारी कामों में काफी व्यस्तता रहेगी, लाभ में वृद्धि होगी । कुछ नई पुरानी समस्याएं भी रहेंगी, भाग्य का सहारा रहेगा ।

मीन : इस सप्ताह आपको अपनी योजनाओं में सफलता पाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ेगा मनोरंजन आदि पर व्यय होगा, किसी विशेष व्यक्ति से सहयोग, कामकाज में रुचि एवं बकाया रकम मिलेगी ।

खेल खेल में

टैनिस और अंधाधुंध पैसा

स्वीडन के टैनिस कलाकार ब्योन बोर्ग ने विम्बलडन का १९७८ का पुरुष सकल खिताब लगातार तीसरी बार जीत कर विश्व लॉन टैनिस इतिहास में इंगलैंड के फ्रेंड पैरी द्वारा १९३६ में स्थापित रिकार्ड की बराबरी कर ली—बोर्ग ने फाइनल ब्योनबोर्ग में आसानी से ६-२, ६-२ और ६-३ से कानर्स को पराजित कर सबको चकित कर दिया। सबका विश्वास था कि कॉनर्स बोर्ग के नाकों चने चबवा देगा । परन्तु जब फाइनल में बोर्ग ने ऐसे हाथ दिखाये जिनका कॉनर्स के पास कोई जवाव नहीं था । कड़े संघर्ष की सबको आशा थी।फाइल पाँच सैटों तक खिचने का तो सबको विश्वास था । शुरू के मैचों में बोर्ग ढीले खेले । अपने प्रथम मैच में तो वह विक्टर अमाया के हाथों पिटते पिटतें बचे । और मैचों में भी प्रदर्शन साधारण रहा । उसके फैन निराश हो चले थे । उन्हें क्या पता था कि बोर्ग अपने तरकस के असली तीर कॉनर्स पर छोड़ने के लिए बचा रहा है ।

खैर आज का विषय है, हमारे टैनिस की दुनिया में बरसता चकित कर देने वाला धन । विश्व के चोटी के खिलाड़ी दुनिया में वर्ष भर प्रथम श्रेणी हवाई यात्रा कर चक्कर लगाते ही रहते हैं और धन कमाते जाते हैं—सभी आश्चर्य जनक रूप से धनी हैं, जिमी कानर्स, आशिक मिजाज विटास जैरूलाइटिस, गुलेरमो विलास और ब्योन बोर्ग—

जरा ब्योन बोर्ग के आय की एक झलक देखिए । अभी बोर्ग की आयु कुल २२ वर्ष है । १९७३ से १९७७ तक बोर्ग पुरस्कार की राशि ही ९० (नब्बे) लाख की जीत चुके हैं ।

इन राशियों के अलावा बोर्ग को विज्ञापन प्रचार का बहुत पैसा मिलता है । केवल शर्ट बनाने वाली एक कम्पनी बोर्ग को उस कम्पनी के बनाये शर्ट पहनने के बदले वार्षिक ३० लाख रुपये देती है अन्डर बियर वाली कम्पनी ३ लाख रुपये देती है—विशेष कम्पनी के रैकट प्रयोग पर वह कम्पनी बोर्ग को सालाना साढ़े सात लाख रुपये देती है । यह राशि केवल अमरीका में हो रहे मैंचों में रैकट के प्रयोग पर मिलती है यदि वही रैकट वह अमरीका से बाहर भी प्रयोग करे तो साढ़े सात लाख रुपये और मिलेंगे ।

टैनिस जूते बनाने वाली कम्पनी उस कम्पनी का जूता पहनने पर बोर्ग को वार्षिक साढ़े सात लाख रुपये देती है—जुराबों के उसे एक लाख रुपये मिलते हैं ।

बोर्ग बालों को बांधने के लिए सिर पर जो पट्टी पहनता उसके उसे साढ़े चार लाख रुपये सालाना मिलते हैं । हाथों में बोर्ग जो बैंड पहनता है उसके ऐवज में तीन लाख रुपये वार्षिक की रकम मिलती है । इनके अतिरिक्त लाखों रुपयों की आय टी. वी. विज्ञापन,कार तथा टैनिस वालों के प्रचार के बदले मिलती है ।

अब आप समझ रहे होंगे कि बोर्ग सर्वाधिक धनी टैनिस खिलाड़ी है । लेकिन नहीं साहब, आय की दृष्टि से बोर्ग तो केवल १२वें नम्बर पर है । जिमि कार्नेस ने अपने ६ वर्षं के टैनिस जीवन में डेढ़ करोड़ रुपये से अधिक कमाया है । २३ वर्षीय जैरुलाइटिस का न्यूयार्क में एक करोड़ रुपये से अधिक की कीमत की तो कोठी ही है—यह साहब सुन्दरियों के कन्हैया हैं इनके पास दो राल्ज रायस, एक फैरारी, एक मर्सीडीज, एक पोर्श तथा एक कैडिलक कार है यह सब टैनिस की कमाई से ही खरीदे गये हैं अब बाकी आप स्वयं अन्दाजा लगा लीजिए । अभी-अभी हमें १९७८ वर्ष के आंकड़े प्राप्त हुए हैं पुरस्कार राशि जीतने वालों में बर्तमान वर्ष में बोर्ग चोटी पर रहे हैं अब तक इस वर्ष उन्होंने ४३ लाख रुपये की राशि जीती है। दूसरे नम्बर पर विटास जैरुलाइटिस हैं उन्होंने ३२ लाख रुपये से कुछ अधिक पर हाथ मारा है । महिलाओं में इस वर्ष की विम्बलडन विजेता मारटीना नावरातीलोवा २५ लाख रुपये की राशि जीत चोटी पर है । ईवान गुलागॉग १० लाख रुपये जीती हैं—वह दूसरे नम्बर पर है ।

हाकी के कुछ रोचक तथ्य

दर्शक—आठ मार्च १९६९ को वेम्बले में हुये इंग्लैंड विरुद्ध वेलस अंतर्राष्ट्रीय महिला टीम के मैच को देखने ६०७०७ दर्शक उमड़ पड़े ।

टीमें—१९६५ के अर्जेंटीना में हुये एक टूर्नामेंट में २६० टीमों ने भाग लिया ।

समय—मैक्सिको ओलम्पिकस १९६८ में हॉलेंड व स्पेन के बीच १४५ मिनट का मुकाबला हुआ हॉलेंड एक मात्र गोल से जीता ।

गोल—१९३२ ओलम्पिकस में भारत ने अमरीका को २४-१ गोलों से पराजित किया । महिला मैचों में १९२३ में इंग्लैंड ने फ्रांस को २३-० से हराया ।

मैडल—हॉकी इतिहास में केवल तीन खिलाड़ियों ने तीन-तीन ओलम्पिक गोल्ड मैडल जीते वे तीनों भारतीय हैं । ध्यानचन्द, रणधीर जैटल व रिचर्ड ऐलन ।

क्रिकेट के यह आंकड़े

अत्यधिक तेजशतक जैकग्रगरी (इंग्लैंड) ने ६० मिनट में दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध सन् १९२१-२२ की शृंखला में जोहेन्सबर्ग में बनाया ।

एक पारी में सर्वाधिक विकेट लेने का श्रेय जिम लेकर (इंग्लैंड) को है जिसने आस्ट्रेलिया के विरुद्ध सन् १९५६ में मानचेस्टर में १० विकेट लिये ।

एक शृंखला में सर्वाधिक विकेट लेने का श्रेय सिंड बार्न्स (इंग्लेंड) को है । इन्होंने ने दक्षिणी अफ्रीका के विरुद्ध ४९ विकेट लिये ।

टैस्ट क्रिकेट में सर्वाधिक विकेट लेने का श्रेय लास गिब्ज (वेस्टइंडीज) को है । इन्होंने ३०९ विकेट लिये । यह विश्व रिकार्ड भी है ।

एक टैस्ट की दोनों पारियों में शतक बनाने वाले भारतीय बल्लेबाज विजय हजारे ने आस्ट्रेलिया के विरुद्ध १९४७-४८ की शृंखला के एडिलेड टेस्ट में ११६ तथा १०१ रन बनाये ।

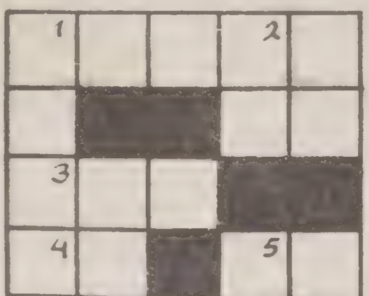
संकलनकर्ता—दीपक जैन "खिलाड़ी"
मिवहार

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२


फैण्टम और शादी की तैयारी
डियाना और फैंटम की शादी पर आपको निमंत्रित किया जाता है। कृपया २४ नवम्बर को बंगाला के घने जंगलों में फैण्टम के स्थान पर पधारें।
बंगाला का राष्ट्रपति लुआगा।
पेड़ की छाल पर निमंत्रण!
आइवरी-लाना का राष्ट्रपति गोरांडा।
बहुत अच्छा!
क्या खुश-खबरी है?
मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि वह ऐसा करेगा।
गहरी दलदल के ऊपर से बन्दर डाकिया निमंत्रण पत्र ले जाता हुआ।
उसके बाद दोड़ाक ले जाता हुआ।
शक्तिशाली जंगल के मुखिया···लोगों का लियांटो, बम्बेसी का वेम्बाटा, ओंगान का राजकुमार ओबिजू और मोरी का मुखिया मुगाटा।
बंगाला के सबसे बड़े अस्पताल के प्रमुख डाक्टर एक्सल के नाम निमंत्रण!
चमत्कारपूर्ण! मैंने उसे जन्म से देखा है।
हैड क० जंगल पैट्रोल के नाम।
?
कर्नल वीरबू।
कोहरे से घिरे हुये पहाड़ों पर रहने वाले १५वीं शताब्दी के राजकुमारों के नाम···
फैण्टम की शादी··· होगी···
फैण्टम की शादी होगी··· आओ हम सब मिल कर एक सप्ताह के लिये शादी समारोह में शामिल हो जायें!
फैण्टम शादी करेगा···चलता-फिरता भूत शादी करेगा···
मम्मी फैण्टम क्या किसी भूत पिशाच से शादी करेगा?



दीवाना वर्ग पहेली ३० रु० इनाम जीतिये



बायें से दायें

१. यमन, जर्मनी, ईरान, लक्जमबर्ग व रावलपिंडी के मुखिया मिलकर एक देश बनाने की क्षमता रखते हैं ! (५)

३. भारत का एक ऊबड़-खावड़ प्रदेश ।(३)

४. आसामी अपने साथ कानून लेकर आया है ! (२)

५. जनता पार्टी के पास भारत की समस्याओं का समाधान है, इसका सबूत ? (२)

६. कई मामलों में मुसलमानों का धर्म गुरु ? (३)

ऊपर से नीचे

१. इन दीवानों के सिर काटने वाला जालिम डिक्टेटर ? (२-३)

२ ऊपर से नीचे, फिर दायें, फिर ऊपर यह पूरा चक्कर एक ऐसे आदमी का नाम बताता है जो कांग्रेस फंड घोटाले के चक्कर में हाल में पुलिस के चक्कर में आया था । (४)

अन्तिम तिथि ९ सितम्बर ७८

नाम——————

पता——————

अगर ? प्रतियोगिता

इनाम ५ रुपये

इस प्रतियोगिता में हम किसी मनोरंजक या अजीब हालात की कल्पना करेंगे, आपको यह बताना होगा कि उस हालत में क्या होता है ! जिस पाठक की अटकल बाजी सबसे दीवानी चतुराई भरी होगी उसे पांच रुपये इनाम । आपका उत्तर एक लाइन में होना चाहिए, इस बार का हमारा आपसे यह सवाल है ।

'अगर हमारे सिर पर भी सींगें होती तो क्या होता ?'

अन्तिम तिथि ९ सितम्बर ७८

प्र० : अंधों का मार्ग दर्शन करने वाले कुत्तों को कैसे सिखाया जाता है ?

उ० : सहस्रों स्वस्थ जवान अंधे व्यक्तियों को मार्ग दर्शक कुत्तों के कारण नई स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है। इन प्रशिक्षित कुत्तों की सहायता से ये अंधे व्यक्ति स्वतन्त्रता-पूर्वक स्वेच्छा से अपने घरों में रह सकते हैं तथा इन्हें अपने घर से बाहर जाने में भी अपने कुत्तों के सिवाय किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ती।

इन कुत्तों के प्रशिक्षण में बहुत धैर्य-पूर्वक तथा अत्यन्त सावधानी से कार्य करना पड़ता है। जहां इन कुत्तों को अपने स्वामी का हुक्म मानने की ट्रेनिंग दी जाती है वहीं उन्हें खतरा होने पर उसे न मानना भी सिखाया जाता है। कोई भी मार्ग दर्शक कुत्ता कभी भी तेजी से आती मोटर के आगे नहीं जायेगा, चाहे उसका स्वामी कितनी भी सख्ती से उसे आगे बढ़ने का हुक्म दे।

इस विशेष प्रशिक्षण के लिये अधिकतर जर्मन शेपर्ड कुत्ते काम में लाये जाते हैं, परन्तु कभी-कभी दूसरी नस्लें जैसे लैबरडोर तथा बोक्सर भी इस प्रशिक्षण को पाते हैं। कुत्ते के इस प्रशिक्षण में लगभग तीन माह का समय लग जाता है। सबसे पहले इन्हें अपने स्वामी का आदेश मानना सिखाया जाता है, आओ, बैठो, लेट जाओ, खड़े रहो तथा लाओ कुछ ऐसे आदेश हैं जिनका अभ्यास इन्हें नित्य बार-बार करवाया जाता है। फिर इस कुत्ते को एक यू की शक्ल का पट्टा पहिनाया जाता है। फिर इस कुत्ते को ट्रेनर के बायीं ओर आधे मीटर से थोड़ा आगे चलना सिखाया जाता है। अब ट्रेनर अंधे व्यक्ति के समान चीजों से टकराते रहते हैं तथा कुत्ता अपने स्वामी को चीजों से बचा कर चलाते हैं इसे मोड़ पर रुक कर इन्तजार करना भी सिखाया जाता है। ये कुत्ते कच्ची राह पर चलती मोटरों इत्यादि के निकलने का इन्तजार करते हैं चाहे इनके स्वामी आगे जाने का भी आदेश दें। राह सुरक्षित होने पर ही ये आगे चलते हैं।

कुत्ते को इनके अंधे स्वामी के पास भेजने से पहले ट्रेनर इनकी आखिरी परीक्षा लेता है। वो अपनी आंखों पर पट्टी बांधकर कुत्ते की सहायता से सड़क की भीड़भाड़ में जाता है, ताकि उसे पूर्ण विश्वास हो जाये कि कुत्ता सुरक्षित मार्ग दर्शक है।

इसके बाद कुत्ते तथा उसके अंधे स्वामी

क्यों और कैसे

को चार सप्ताह तक साथ-साथ ट्रेनिंग दी जाती है। ये दोनों हर प्रकार के आदेशों को देकर तथा पालन करके अभ्यास करते हैं। ये कुत्ते अपने स्वामी को प्रसन्न कर शाबाशी पाने के उत्सुक रहते हैं। फिर ये दोनों साथ-साथ तेजी से घूमने का अभ्यास करते हैं। अब ये दोनों एक दूसरे के इशारों को समझने लगते हैं। शीघ्र ही ये सड़कों के शोर तथा भीड़भाड़ में जाने के लिए तैयार हो जाते हैं। शुरू में प्रशिक्षक की कड़ी निगरानी में कुत्ता अपने अंधे स्वामी को सावधानी से सुरक्षित स्थानों से ले जाता है और धीरे-धीरे दोनों एक जोड़े के समान कार्य आरम्भ कर देते हैं तथा इस प्रकार स्वतंत्रता पाकर एक अंधा व्यक्ति एक नया जीवन आरम्भ कर देता है।

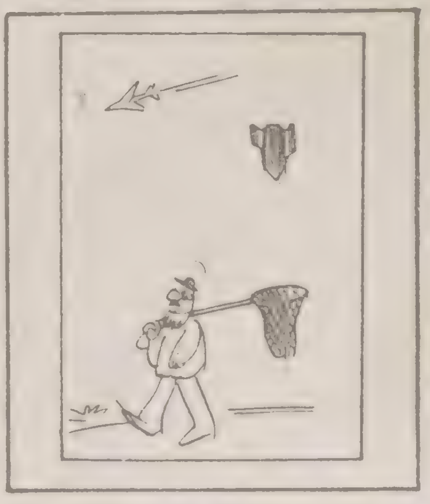


प्र० : आस्वादन शक्ति क्या होती है तथा क्या पशुओं में आस्वादन की शक्ति होती है ?

उ० : स्वाद की अनुभूति मनुष्य को भोजन के अपार आनन्द के साथ-साथ उसकी रक्षा भी करती है। स्वाद की अनुभूति से ही हम सड़े-गले खराब पदार्थों के उपयोग से बच जाते हैं। वास्तव में स्वाद अणुओं के प्रभाव को अनुभव करने की शक्ति को कहते हैं। हिलने-डुलने वाले अणु नसों को प्रेरित करते हैं जो मस्तिष्क को विशेष प्रकार के संदेश भेजती हैं, इन संदेशों को ग्रहण कर ही उन्हें हम भिन्न-भिन्न स्वादों में अनुभव करते हैं। स्वाद केवल उन्हीं पदार्थों का पता चलता है जिनमें अणु हिलते डुलते हैं, उदाहरण के लिए कांच के टुकड़े का कोई स्वाद नहीं होता तथा जिन पदार्थों में अणु अधिक तेजी से हिलते डुलते हैं उनमें अधिक स्वाद अनुभव होता है, इसी कारण ठंडे पदार्थों की अपेक्षा गर्म पदार्थ में अधिक स्वाद होता है।

स्वाद की अनुभूति सबसे पहले जीभ पर स्थित स्वादकलिका द्वारा ग्रहण की जाती है, इनमें कई प्रकार की अनुभूति ग्रहण करने की क्षमता होती है, जिसे हम स्वाद कहते हैं।

ये स्वादकलिका मनुष्य तथा उच्च जीवों में जबान पर पाई जाती हैं। इनकी संख्या हर जीव की आवश्यकता के अनुसार होती है। उदाहरण के तौर पर मनुष्य केवल एक मध्यम स्तर का स्वाद जानने वाला जीव है। हमारी जबान पर लगभग ३००० स्वादकलिका होती हैं, ह्वेल मछली जो की मछलियों के झुंड के झुंड निगल जाती है कि जबान पर न के बराबर स्वादकलिका होती हैं। परन्तु आश्चर्य की बात है कि सूअर स्वाद पहिचानने में मनुष्य से कहीं आगे है, उसकी जबान पर ५,५०० स्वादकलिका होती हैं तथा गाय की जबान पर इनकी संख्या ३५,००० होती हैं। सबसे अधिक स्वादकलिका हिरन की जबान पर होती हैं इनकी संख्या ५०,००० के लगभग है। तो आपने देखा कि न केवल पशु स्वाद चख सकते हैं अपितु कुछ तो मनुष्य से भी अधिक सूक्ष्मग्राही होते हैं।



क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

मच्छर है महान

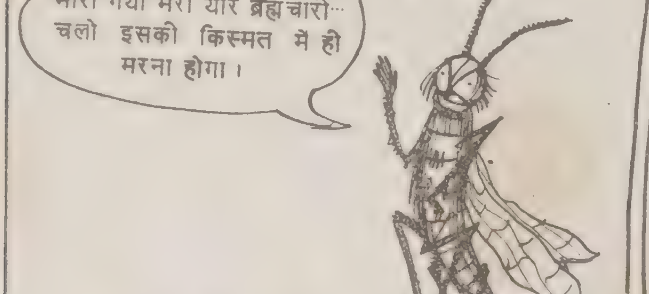
बरसात के आने के साथ ही मच्छर भी पैदा होने शुरू हो गये हैं। प्राय: लोग मच्छरों से घबराते हैं। उनसे घृणा करते हैं। खून चूसने वाला गंदा जानवर समझकर धिक्कारते हैं यह ठीक नहीं हैं। आज तक किसी ने सच्चे दिल से मच्छरों का अध्ययन करने का कष्ट नहीं किया। हमने तो देखा कि मच्छरों में बहुत महानता छिपी है हमें आशा है कि हमारा यह फीचर पढ़ने के बाद आप मच्छरों को आदर की दृष्टि से देखने लगेंगे।

संगीत प्रेमी मच्छर



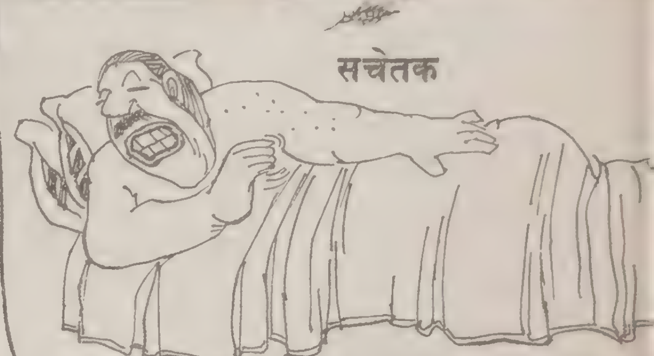
मच्छर काटने से पहले कान के पास आकर कई जटिल राग आल्हाबिलावल, गुजरीतोड़ी, भीम पलासी तथा दरबारी कान्हड़ा आदि सुना कर आप पर संगीत की अमृत वर्षा करता है। इसके ऐवज में थोड़ा सा खून ले जाये तो क्या हुआ? संगीत के लिये राजे महाराजे खजाने तक लुटा देते थे।

बुद्धिमान



रोज सैंकड़ों मच्छर मारे जाते हैं। कभी कोई मरे मच्छरों की मृत्यु की जांच की मांग नहीं करता। उन्हें पता है गढ़े मुर्दे उखाड़ने का कोई लाभ नहीं।

सचेतक



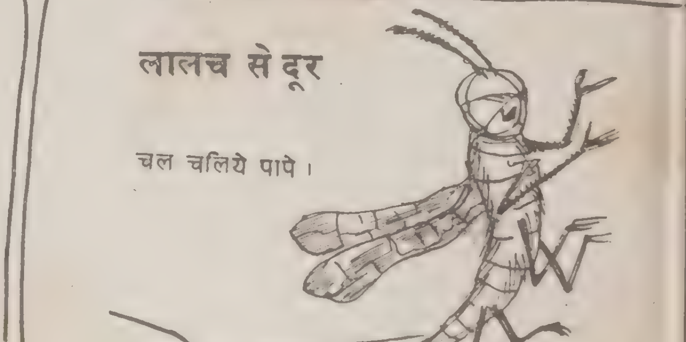
मच्छर हमें गहरी नींद नहीं सोने देता। इससे चोरों को हमारे घर हाथ मारने के कम अवसर मिलते हैं।

उपदेशक

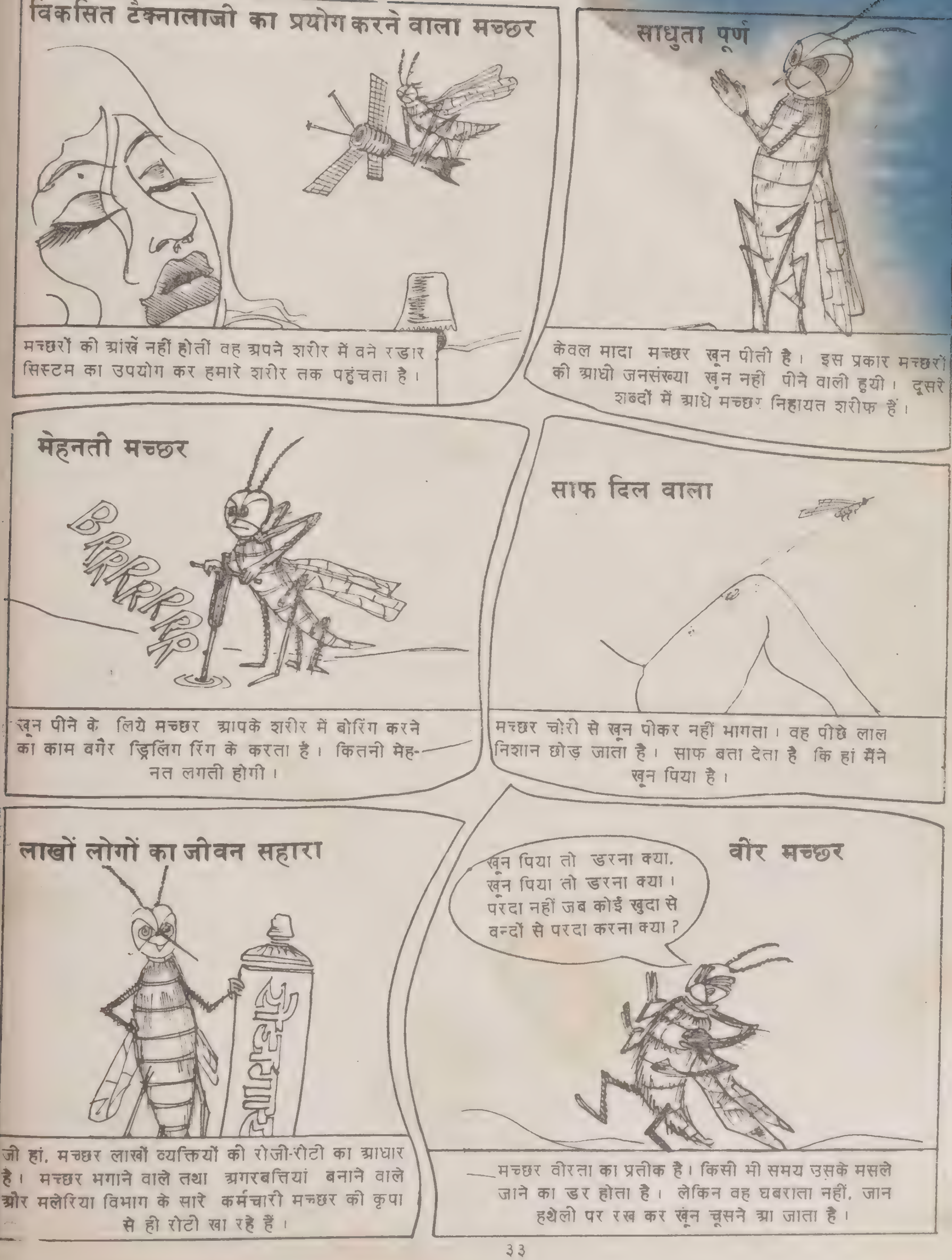


मच्छर को मारने के बाद बदबू सी आती है। (जाने वाले लौट कर नहीं आते रह जाती है उनकी बदबू) जो हमें यह याद दिलाता है आदमी मर जाता है तो उसके बुरे कर्मों की बू पीछे रह जाती है। बुरे कर्म मत करो।

लालच से दूर



मच्छर लालची नहीं होता। वह उतना ही खून पीता है। जितना पेट में आये। वह बोतल भी तो भर के ले जा सकता है।


विकसित टैक्नालाजी का प्रयोग करने वाला मच्छर
मच्छरों की आंखें नहीं होतीं वह अपने शरीर में बने रडार सिस्टम का उपयोग कर हमारे शरीर तक पहुंचता है।
साधुता पूर्ण
केवल मादा मच्छर खून पीती है। इस प्रकार मच्छरों की आधी जनसंख्या खून नहीं पीने वाली हुयी। दूसरे शब्दों में आधे मच्छर निहायत शरीफ हैं।
मेहनती मच्छर
BRRRRRRR
खून पीने के लिये मच्छर आपके शरीर में बोरिंग करने का काम बगैर ड्रिलिंग रिंग के करता है। कितनी मेहनत लगती होगी।
साफ दिल वाला
मच्छर चोरी से खून पीकर नहीं भागता। वह पीछे लाल निशान छोड़ जाता है। साफ बता देता है कि हां मैंने खून पिया है।
लाखों लोगों का जीवन सहारा
जी हां, मच्छर लाखों व्यक्तियों की रोजी-रोटी का आधार है। मच्छर भगाने वाले तथा अगरबत्तियां बनाने वाले और मलेरिया विभाग के सारे कर्मचारी मच्छर की कृपा से ही रोटी खा रहे हैं।
वीर मच्छर
खून पिया तो डरना क्या,
खून पिया तो डरना क्या।
परदा नहीं जब कोई खुदा से
बन्दों से परदा करना क्या?
—मच्छर वीरता का प्रतीक है। किसी भी समय उसके मसले जाने का डर होता है। लेकिन वह घबराता नहीं, जान हथेली पर रख कर खून चूसने आ जाता है।

आपस की बातें

चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

नरेशकुमार सिरोही—सरधना : डीयर अंकल क्या हमारी आंटी जी भी आप की तरह बातूनी हैं ?

उ० : इस मामले में वह ऐसा घिसा हुआ ग्रामोफोन रिकार्ड हैं, जिस पर एक जगह सूई फंस जाए तो बस वह एक ही सुर में बोलता रहता है ।

✤

मोहित, 'प्रेमी' माडल टाऊन : चाचा जी, आपके मास्टर जी ने मुझे बताया कि आपने ३ बार फेल होकर मैट्रिक का इम्तहान पास किया था ।

उ० : आपके समझने या उनके बताने में कुछ भूल हुई है । ३ को उलट कर ६ कर लीजिये । इस सम्बन्ध में एक दिलचस्प बात शायद आपको किसी ने नहीं बताई । हम जब फेल होते थे, तो हर बार यह कहते थे कि इस बार अगर पास न हुए तो हम आत्म-हत्या कर लेंगे । हम जब बार-बार फेल होते रहे और घर वालों को यह विश्वास हो चला कि परीक्षा में पास तो हम सारी उम्र नहीं होंगे पर आत्म-हत्या का जो नारा हमने लगाया है वह अब तक पूरा क्यों नहीं हुआ है ? इसके लिये बेचारे घर वाले जो कर सकते थे उन्होंने कर दिया । क्या कर दिया ? हमारी शादी कर दी ।

✤

सुनीलकुमार वर्मा—पटना : चाचा जी, यदि अचानक आपका निधन हो जाए तो आप क्या करेंगे ?

उ० : दहाड़ें मार-मार कर शोर मचायेंगे कि जरूर इसमें इन्दिरा गांधी की कोई चाल है । यही शोर मचाने का फैशन है ना आजकल ?

✤

हरगुन जसवानी,—मन्डला : चाचा जी, दीवाना के कुल कितने दीवाने हैं ?

उ० : दस लाख से भी अधिक ।

✤

प्रदीपसिंह 'मठास'—टाटानगर : मनुष्य इतने दिन जिन्दा रहता है । आखिर उसकी मंजिल क्या है ?

उ० : इसके लिए कहा गया है,

जानना चाहा ये अफ़साना वो अफ़साना हुआ,
राज जिसने खोलना चाहा वो दीवाना हुआ ।

जो जान पता नहीं कब चली जाएगी, उस पर पता नहीं हम क्या-क्या कुर्बान कर देते हैं ! एक शायर ने कहा है ।

शै हर इक जान पर फ़िदा कर दी,
बेवकूफ़ी की इंतेहा कर दी ।

✤

हरगुन जसवानी—मंडला : चाचा जी, क्या आपको कभी असली गुस्सा आया है ?

उ० : जी नहीं, क्या आपने सुना नहीं कि भगवान गंजे को नाखून नहीं देता और हमारा सर कैसा है, यह आपको मालूम ही है ।

✤

अनील कुमार गुलाटी—रिवाड़ी : हम दो दोस्तों को देखकर सारे मुहल्ले वाले जलते हैं । बताइये हम क्या करें ?

उ० : मुहल्ले वालों को दीवाना पढ़ने की सलाह दीजिये । उन्हें जलने की बजाय अपनी रोटियां पकाने के लिए चूल्हा जलाने की फुर्सत भी नहीं मिलेगी ।

✤

योगेश कुमार अग्रवाल—डीमापुर : मैं आपके कर्म की रेखा और हाथ की रेखा का अन्तर बता सकता हूं । क्या आप जानना चाहेंगे ?

उ० : हमें तो फिल्म की रेखा दे दीजिये, उसे हम धर्म की रेखा समझ लेंगे । बाकी रेखायें और उनके अन्तर आप अपने पास ही रखिये ।

✤

अजय कुमार गुप्ता—तपकरा : क्या घसीटा राम जी आपके जुड़वां भाई लगते हैं ?

उ० : हमारे 'जुड़वां भाई' क्या, 'टुटवां भाई' भी नहीं लगते । इनसे रिश्ता जोड़ने वाले को चाहिए कि पहले वह अपने सर के बाल गिन ले और हमारे सर के बाल देखिये तो वह गिनती के भी नहीं है ।

✤

किरन कुमार सिंह—बम्बई : कानून किताबों में होता है या दिमाग में ?

उ० : दिमाग से होकर कानून किताबों में जाता है पर आजकल सुना है वह किताबों से निकल कर 'बटवे' में पहुंच गया है ।

✤

दिनेश मटाई, 'राजा'—इन्दौर : प्रेमी सिनेमा की बजाय मन्दिर में क्यों नहीं मिलते ?

उ० : क्योंकि वह जानते हैं कि चाचा बातूनी सिनेमा की बजाय एक बार मन्दिर में गये थे, लोगों ने पकड़ कर उनकी शादी कर दी थी । वैसे सच पूछिये तो मन पवित्र हो तो सिनेमा भी मन्दिर होता है और कई बार हमने मन्दिर की हालत भी सिनेमा जैसी देखी है ।



मीना अग्रवाल—खरसांग : चाचा जी, मैं यह जानना चाहती हूं कि मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र कौन है ?

उ० : एक छोटा-सा मित्र तो चिल्ली है । बाकी तो यह भी समझ में नहीं आता कि मनुष्य क्या खुद अपना भी मित्र है ।

✤

के० पी० अरोड़ा—काशीपुर : चाची जी जब आप से रूठती हैं तो आप क्या करते हैं ?

उ० : हम क्या कर सकते हैं, हमें तो आज तक यह समझ में नहीं आया । एक बार हमारी श्रीमती जी ने हमें बताया, 'हमारी पड़ौसिन जब अपने पति से रूठती है तो वह उसे एक नई साड़ी लाकर देता है । तुम ऐसा क्यों नहीं करते ?' हमने परेशान होकर उत्तर दिया, भला मैं ऐसा कैसे कर सकता हूं ? पता नहीं वह मेरी साड़ी स्वीकार करेगी या नहीं ।'

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

दिल्ली के बढ़ते कदम

स्वच्छ प्रशासन

दिल्ली प्रशासन ने भ्रष्टाचार खत्म करने और जनता को हर प्रकार की बुनियादी-सुविधाएं दिलाने के लिए कारगर कदम उठाए हैं।

हरिजनों व पिछड़े वर्गों की भलाई

हरिजन कल्याण योजनाओं पर ७५ लाख रुपये खर्च,
चालू वित्तीय वर्ष में १०४ लाख रुपये की व्यवस्था।
कमजोर वर्ग के लोगों के लिए पुनर्वास बस्तियों में १०० आंगन बाड़ियां और अन्य सुविधाएं। तकनीकी संस्थानों में सभी हरिजन छात्रों को विशेष छात्रवृत्तियां।

सबके लिए शिक्षा

शिक्षा प्रसार के मामले में राष्ट्रीय लक्ष्यों से दिल्ली कहीं आगे—
सभी बच्चों को शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए १५ उच्चतर माध्यमिक तथा ६ माध्यमिक विद्यालय और खोले गये।
इस वर्ष १६ उच्चतर माध्यमिक, १० माध्यमिक तथा ५० प्राथमिक विद्यालय खोलने का लक्ष्य। पिछड़े क्षेत्रों में ३० अल्पकालिक स्कूल।
ग्रामीण छात्राओं को मुफ्त परिवहन सुविधा।
निर्धन छात्रों को मुफ्त पुस्तकें व वर्दियां।

चिकित्सा सुविधाएं

गरीबों तथा गांवों के लोगों के द्वार पर चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध।
दीनदयाल उपाध्याय अस्पताल में ५०० बिस्तरों की व्यवस्था।
शाहदरा क्षेत्र में ५०० बिस्तरों वाला अस्पताल बनाने का कार्य आरम्भ।
ग्रामीण क्षेत्रों व दूर-दराज की बस्तियों में १०० बिस्तरों वाले अस्पताल तथा ५ अस्पतालों के लिए स्थानों का चुनाव।
लोकनायक जयप्रकाश नारायण अस्पताल में गुरु नानक नेत्र चिकित्सा केन्द्र की स्थापना।

खाद्य एवं नागरिक सम्भरण

दाल, सब्जी, चाय, साबुन आदि आवश्यक वस्तुएं उचित दामों पर।
राशन कार्ड पर और अधिक अनाज तथा चाहे जितना आटा।
भ्रष्ट व्यापारियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही।

सूचना एवं प्रचार निदेशालय, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली द्वारा प्रसारित

जरा मुस्कुरा

नशे का सामान बेचने वाली दुकान के मालिक ने एक नशेबाज को नौकर रख लिया। नशे में वह नया नौकर एक गलती कर बैठा जिससे दुकान को बड़ी हानि हुई।

'जानते हो तुम्हें इसकी सजा मिलेगी।' मालिक ने क्रोध से कहा। 'तुम्हारी तनखा में से प्रति मास तिहाई हिस्सा काट लिया जाएगा, जब तक हमारा घाटा पूरा नहीं हो जाता।'

'लेकिन इसमें तो बहुत साल लगेंगे।'

'नहीं मैं तुम्हारी तनखा उसी हिसाब से बढ़ा दूंगा जिससे कि मेरा घाटा शीघ्र ही पूरा हो जाए।'

●

गृहस्वामिनी (दासी को नौकर रखते समय)—अच्छा, तुम मेहमानों की खातिर भी कर सकती हो?

दासी—जी हाँ, दोनों तरह से।

गृहस्वामिनी—दोनों तरह, कैसे?

दासी—इस तरह भी कि वे एक बार आकर फिर कभी न आएं और इस तरह भी कि फिर कभी वे यहां से जाने का नाम न लें।

●

मालिक—मैं तुम्हारे काम से बहुत खुश हूं। अब तुम कम्पनी के मैनेजर बना दिये जाओगे और तुम्हारी तनखा भी दुगनी हो जायेगी।

कर्मचारी—नहीं, मुझे उससे कोई लाभ नहीं होगा। मुझे आप खजांची ही बना रहने दीजिए।

●

मालिक (नौकरी के लिए आए हुए उम्मीदवार से)—'तुमने यह नहीं बताया कि तुम अपने पिछले काम पर से क्यों निकाले गये?'

उम्मीदवार—'हाँ। आपने भी मुझे यह नहीं बताया कि आपका पहला नौकर आपको छोड़कर क्यों चला गया?'

●


सवाल यह है ?
कहते हैं मानव पहले बन्दर था, समय के साथ-साथ उसमें तबदीली आई और वह मनुष्य बन गया ।
कहते हैं जनता पार्टी पहले मनुष्य थी । समय के साथ-साथ उसमें परिवर्तन आया तो वह क्या बन गई......?
सवाल यह है, ?
जिसका जवाब नहीं ।

ठ १३ से आगे

ोर आश्चर्य से कंपकंपाती आवाज में ले—

'यह आप क्या कह रहे हैं मालिक ?'

'क्यों ? क्या आपको लड़की पसन्द हीं ?'

'नहीं मालिक···मैं यह उद्दंडता कैसे र सकता हूं···और फिर अपनी बिटिया तो ी का रूप है···मैं तो यह सोच रहा था कहाँ आप राजा भोज और कहाँ मैं ुवा तेली ?'

'ज्वाला प्रसाद जी, अभी आप ही ने कहा था कि रचना जिसकी पत्नी बनेगी स्वयं लखपति बन जाएगा और फिर दमी छोटा-बड़ा दौलत से नहीं अपने कर्मों होता है।'

'मालिक···आप तो देवता हैं मालिक।'

'हमारे पास समय बहुत कम है ाला प्रसाद जी' ठाकुर साहब ने कहा, 'हम हते हैं कि अपनी आँखें बन्द करने से पहले रचना के हाथ पीले और उसके गले में ल-सूत्र देख लें।'

'भला मैं आपकी आज्ञा कैसे टाल सकता मालिक।'

'तो फिर आप जाइए और कल ही इस दी का प्रबन्ध कर लीजिए।'

'जी—!' ज्वाला प्रसाद ने आश्चर्य से हा।

'हाँ ज्वाला प्रसाद जी···हमें अब अपनी सों पर इतना भी विश्वास नहीं रहा कि नहीं कल तक भी हम जी सकेंगे या ीं।'

'ऐसी बातें मत कीजिए मालिक··· वान आपकी छाया बिटिया के सिर पर नों तक रखे।'

'ज्वाला प्रसाद जी ! अगर आपको े तनिक भी सहानुभूति है तो इस शादी प्रबन्ध कल ही हो जाना चाहिए—हमें अधिक धूमधाम भी नहीं करनी है—।'

'जो मालिक की आज्ञा।'

रचना द्वार के पास ही खड़ी यह सब सुन रही थी···ठाकुर साहब और ला प्रसाद के अन्तिम वाक्य सुनकर उसके की दशा बड़ी विचित्र हो गई और वह ी हुई अपने कमरे में चली गई···कुछ तक वह पागलों के समान कमरे में खड़ी और फिर बिस्तर पर गिर कर उसने या अपने सीने के नीचे दबा लिया···उसे अपना शरीर हल्का-फुल्का-सा होकर आकाश की ओर उड़ता अनुभव हो रहा था और कानों में रूपा की आवाज गूंज रही थी—

'पति से अधिक सुन्दर और प्यारा सम्बन्ध किसी और का हो सकता ही नहीं—'

'इसीलिए तो लड़की एक अजनबी पति की बांहों में पहुंच कर अपने जन्म देने वाले माता-पिता को भूल जाती है—'

'प्रति—।'

'पति—।'

रचना के पूरे बदन में गुदगुदी सी होने लगी।

ज्वाला प्रसाद हवाई घोड़े पर सवार अपने घर पहुंचे जब द्वार पर रुके तो उनकी सांस बुरी तरह फूली हुई थी। आंखों में हर्ष नाच रहा था। अधिक प्रसन्नता के कारण उन्होंने जोर से दरवाजा पीट डाला अन्दर से कौशल्या की झुंझलाहट और गुस्से में भरी दहाड़ गूंजी—

'कौन गधा किवाड़ तोड़े डाल रहा है ?'

'कौशल्या···ऐ कौशल्या···' ज्वाला प्रसाद हांपते हुए चीखे।

'अरे···यह तो सीता के बापू हैं।'

'जल्दी दरवाजा खोलो···कौशल्या।'

'खोलती हूं—क्या प्रलय आ रही है।'

कौशल्या की गुर्राहट सुनाई दी—

'ओ री सीता···जरा उठ कर दरवाजा खोल दे जल्दी से···देख, तेरे बापू के पीछे शायद कुत्ते लग गए हैं।'

कुछ देर बाद द्वार खुल गया। ज्वाला प्रसाद दोनों पट्टों को धकेलते हुए अन्दर प्रविष्ट हुए और हांपते हुए बोले—

'कौशल्या···कौशल्या कहाँ हो तुम ?'

'हाय राम ! अब इतनी बड़ी कौशल्या भी दिखाई नहीं दे रही—यह क्या बैठी हूं ?'

'अरे जल्दी से एक गिलास पानी पिलाओ मुझे।'

'अरे तुम तो सच ही हांप रहे हो—क्या वास्तव में कुत्ते पीछे लग गए थे ?'

'अरे···तुम सुनोगी तो तुम भी खुशी से नाचने लगोगी।'

'ऐसी कौन-सी तुम्हारे नाम लाटरी निकल आई।'

'अरे भाग्यवान् लाटरी तो कुछ भी नहीं, उससे भी बढ़ कर है।'

सीता, लाजो और चुन्नी तीनों जाग गई थीं और आश्चर्य से ज्वाला प्रसाद को देख रही थीं। कौशल्या आंखें फाड़ कर उन्हें देखती हुई बोली—

'अरे—तो तुम कुछ मुंह से फूटो भी··· क्या पहेलियां ही बुझाते रहोगे ?'

ज्वाला प्रसाद बड़ी शान से बैठ गए और बोले—

'अच्छा पहले यह बताओ···आज बनिया अपने ऋण की उगाही के लिए आया था क्या ?'

'हाँ आया था···धरना देकर बैठ गया था···कितनी मुश्किलों से हाथ-पैर जोड़ कर उससे प्राण छुड़ाए हैं···'

'यह तो कुछ मैं भी जानती हूँ।'

'अच्छा···' ज्वाला प्रसाद बड़े प्रसन्न स्वर में बोले, 'सीता की ससुराल वाले क्या अल्टीमेटम देकर गये थे ?'

'अरे हाँ—कह गये थे कि अगर इस बैसाख में फेरे न किए तो विवाह समाप्त समझो—और पांच हजार से कम दहेज में नहीं लेंगे।'

'वाह—वाह···' ज्वाला प्रसाद और भी प्रसन्न होकर बोले, 'लाजो का ससुर क्या कह गया था ?'

'उसका दिमाग तो सातवें आसमान पर है—कहता था मेरा बेटा एम० ए० पास कर चुका है···अब दस हजार से एक पैसा कम नहीं लूंगा।'

'वाह···वाह···वाह···।'

ज्वाला प्रसाद और भी प्रसन्न नजर आने लगे···। तीनों लड़कियों के चेहरों पर आश्चर्य के साथ ही भय भी झलक रहा था। कौशल्या की भी आश्चर्य से आंखें फटी पड़ रही थीं—वह डरे हुए स्वर में बोली—

'ए जी···यह क्या खुश होने की बातें हैं ?'

'बहुत ही खुश होने की बातें हैं।' ज्वाला प्रसाद अपनी दाहिनी जांघ पीट कर उछलते हुए बोले।

'कहीं तुम पागल तो नहीं हो गए हो ?'

'अरे—तुम सुनोगी तो तुम भी पागल हो जाओगी।'

ज्वाला प्रसाद और भी अधिक उछलने लगे और फिर चारों ओर देख कर बड़े गर्व से गर्दन अकड़ा कर बोले—

'नहीं नहीं···बिल्कुल नहीं चलेगा।'

'क्या नहीं चलेगा ?' कौशल्या ने आश्चर्य से पूछा।

'अब मकान बिल्कुल नहीं चलेगा—अब हम एक बहुत बड़ा सुन्दर-सा शानदार बंगला लेंगे जिसमें मेरा और तुम्हारा कमरा अलग-अलग होगा और इन लड़कियों के कमरे अलग-अलग—और हां अब हम अपनी सीता, लाजो और चुन्नी···तीनों के विवाह ऐसे लड़कों से करेंगे जो घर-जमाई रहने पर सहमत हो जाएं।'

कौशल्या और तीनों लड़कियां ज्वाला प्रसाद को बड़े आश्चर्य से देखने लगीं···और फिर तीनों डरी-डरी सी एक-दूसरे के निकट सरकने लगीं—कौशल्या भी थोड़ा-सा पीछे सरक गई थी और उसकी आंखों से भय झांकने लगा था—वह कांपती आवाज में बोली—

'सीता के बापू···तुम ठीक तो हो सीता के बापू।'

ज्वाला प्रसाद ने एक जोरदार ठहाका लगाया और देर तक हंसते ही रहे। कौशल्या और तीनों लड़कियां डर कर एक-दूसरे से लिपट गई थीं। ज्वाला प्रसाद ने बड़ी मुश्किल से अपना ठहाका रोका और दोनों जांघें पीट कर बोले—

'डर गईं···तुम लोग डर गईं···?' अरे मैं पागल नहीं हुआ हूँ—मैं जो कुछ कह रहा हूं सच कह रहा—अब न हमारे ऊपर बनिये का ऋण रहेगा···न खर्चे की तंगी और न हम इस घुटन भरे स्थान में बन्दी बन कर रहेंगे—और अब सीता, लाजो और चुन्नी तीनों की शादियां भी बड़ी धूम-धाम से होंगी।'

कौशल्या ध्यानपूर्वक ज्वाला प्रसाद को देखती हुई बोली—

'मगर···मगर···यह सब होगा कैसे?'

'चमत्कार है—अपना सौभाग्य है।'

'क्या मतलब?'

'तुम्हें मालूम है ना हम पिछले पन्द्रह वर्ष से सेठ रघवर प्रसाद के मुनीम हैं।'

'सबको मालूम है।'

'लेकिन अब हम उनके मुनीम नहीं कहलाएंगे।'

'क्यों? क्या उन्होंने तुम्हें नौकरी से निकाल दिया?'

'नहीं भाग्यवान···अब हम सेठ रघवर प्रसाद के सम्बन्धी बनने वाले हैं।'

'क्या?' कौशल्या उछल पड़ी।

'हां भाग्यवान! सेठ रघवर प्रसाद ने स्वयं प्रार्थना की है—उनकी इकलौती बेटी है ना रचना—वह उसकी शादी हमारे बेटे से करना चाहते हैं।'

'त···त···तुम—सच कह रहे हो?'

तीनों लड़कियां भी खुशी से विस्मित रह गई थीं। ज्वाला प्रसाद कह रहे थे।

'हां भाग्यवान! अब सारा दरिद्र दूर हो जायेगा—सेठ रघवर प्रसाद करोड़पति है और रचना उनकी इकलौती बेटी है—सेठ रघवर प्रसाद को अब दूसरी बार दिल का दौरा पड़ा है—अगर उन्हें तीसरी बार भी दिल का दौरा पड़ा तो समझ लो कि उनका बचना कठिन है—इधर वह मरे और उधर हमारा बेटा करोड़पति बना।'

'अच्छा···!!'

कौशल्या की आंखें खुशी से चमकने लगी थीं। ज्वाला प्रसाद ने जोर से पुकारा—

'दशरथ—अरे ओ दशरथ।'

'दशरथ तो अभी कालिज से लौट कर ही नहीं आया है—।'

'हाय—ज्वाला प्रसाद ने आश्चर्य से कहा, 'यह कालिज में इस समय कौन-सी क्लासें हो रही हैं?'

'क्लासें नहीं—आज ड्रामा था कालिज में।'

'ओह—तो वह ड्रामा देख रहा था।'

'ड्रामा देख नहीं रहे होंगे भैया···' सीता ने कहा, 'भैया ड्रामे में हीरो का 'रोल' कर रहे होंगे।'

'हीरो बना है?' ज्वाला प्रसाद उछल पड़े।' क्या बकवास है···अब वह स्टेज पर भी उछल-कूद करने लगा है।'

लड़कियां मुंह दबा कर हंसने लगीं।

□ दशरथ ने कलाई की घड़ी देखी और फिर अंधेरे में बाग के कोने में पहुंच कर आंखें फाड़-फाड़ कर इधर-उधर देखने लगा लेकिन उसे कोई दिखाई नहीं दिया। दशरथ ने धीरे से पुकारा—

'रानी—!'

'—' कोई उत्तर नहीं।

'रानी—!' दशरथ ने दोबारा पुकारा।

फिर भी कोई उत्तर नहीं मिला। दशरथ बड़बड़ाया—

'वापस तो नहीं चली गई? मगर नहीं···मुझसे मिले बिना वह वापस नहीं जा सकती।'

अचानक पीछे से किसी ने उसकी आंखें बन्द कर लीं और वह चौंक पड़ा···फिर मुस्करा कर अपनी आंखों पर रखे हुए हाथों पर हाथ फेरने लगा···आवाज आई—

बूझो तो कौन है?'

'मेरी रानी के सिवा कौन हो सकता

रानी हंसती हुई सामने आ गई। द
ने उसकी कमर में हाथ डाल कर हंसते
उसे सीने से लगा लिया—रानी उसके
से लग गई और रूठे हुए स्वर में बोली—

'जाओ हम तुमसे नहीं बोलते।'

'क्यों? देर हो गई···इसलिए
गई? क्या बताऊं रानी···मेकअप उता
उतारते लोगों ने घेर लिया था। बड़ी मुश्कि
से जान छुड़ाई तो पता चला मेरे कपड़े
गायब हैं—ड्रामा के कपड़े पहने बैठा रह
बड़ी मुश्किल से कपड़े मिले···किसी ने शर
से अलमारी के पीछे छिपा दिये थे—मैं
चाहता हूं···तुम्हें बहुत प्रतीक्षा करनी पड़ी

'प्रतीक्षा···प्रतीक्षा तो मैं तुम्हारी ह
बरस तक कर सकती हूं।'

'फिर क्यों रुष्ट हो?'

'वह जो तुम्हारे साथ स्टेज पर हीर
बनी थी ना—।'

'हां—क्यों?'

'अरे उसने तुम्हारी पत्नी का रोल
था—बिल्कुल ऐसे लग रहा था जैसे सच
वह तुम्हारी पत्नी ही हो—क्या प्यारी न
से देख रही थी तुम्हें?'

'अरे हां, रानी—उससे तो मुझे भी
लगने लगा था।'

'अच्छा जी···डर लग रहा था?
इतनी देर तक चिपटाए खड़े रहे।'

'अरे मैं चिपटाए खड़ा रहा था या
चिपटी खड़ी रही थी।' दशरथ ने
'बड़ी मुश्किल से उसने मुझे छोड़ा था—
तो उससे बच कर भागा था।'

'मेरा बस चलता तो मैं उसके हाथ
काट कर फेंक देती।

'अच्छा!' दशरथ उसे खींच कर
करता हुआ मुस्कराया 'इतना ही प्यार क
हो मुझसे?'

'अच्छा···तो तुम्हें सन्देह है मेरे
पर?'

'सन्देह कहां हो सकता है रानी···मैं
मजाक कर रहा था।'—फिर वह गं
होकर बोला, 'यह तो भगवान ही जानते
कि मैं तुम्हे कितना प्यार करता हूं।'

'सब प्रेमी ऐसे ही कहा करते हैं।'

'अर्थात्···तुम समझती हो मैं के
डायलॉग बोलता हूं?'

शेष आगामी अं



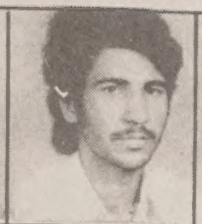
प्रजयकुमार स.धना, श्रीरामा निकुन्ज, के. एफ. ४, नया कविनगर, गाजियाबाद (उप्र.) १६ वर्ष, फिल्में देखना, कार चलाना और पत्र-मित्रता ।



संजय जैन १-बी/४८ रमेश नगर, नई दिल्ली-१५, १८ वर्ष, फोटोग्राफी करना, दोस्ती करना, फिल्में देखना तथा दीवाना पढ़ना ।



ईकरामुद्दीन कोहरी, मस्जिद मोहल्ला कोरियान बीकानेर, २० वर्ष, पुराने गीत गाना व सुनना, गीत प्रतियोगिताओं में भाग लेना ।



आनन्द कुमार अरोड़ा, आनन्द भवन म. नं० बी-११/७१४ पुराना शहर कोटकपुरा, २१ वर्ष, फिल्मी दुनिया की °र करने के सपने देखना ।



दयाल कुमार ईसरानी द्वारा काश्मीर पान भण्डार, १८, रिव्हर साइड रोड इन्दौर-१ ७० वर्ष, पत्र-मित्रता, संगीत फरमाईश भेजना ।



श्री कृष्ण प्रसाद बनजारा, दुर्गापुर गोड मोड़, भरिया धनबाद, १८ वर्ष, रंगमच पर कलायें दिखाना, कवि सम्मेलन में भाग लेना ।



नवरतन लाल वर्मा दोस्त शोभा रेडियो श्रोता संघ, अल्कामण्डी, गोला बाजार, गोरखपुर, (उ. प्र.), १७ वर्ष, कहानी पढ़ना व लिखना ।



अशोक कुमार वर्मा, वर्मा शाही स्टोर रैमवे रोड, रोहतक १५ वर्ष, पत्र मित्रता, क्रिकेट खेलना, रसगुल्ले खाना, गाने गाना व सुनना ।



सुनील जैन बनी पार्क, कान्ती चन्द्र रोड, मकान नं० २७/ग/४, जयपुर, १२ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना तथा खेलना-कूदना ।



सत्यपाल कपूर, मकान न० ३७/११, पानीपत, २७ वर्ष, फिल्म देखना, दोस्ती करना, घड़ियों की मुरम्मत करना, दीवाना पढ़ना ।



उमारमण अग्रवाल, मारवाड़ी महाविद्यालय फारबिसगंज, दरभंगा-४, १७ वर्ष, प्रधान मन्त्री के साथ देश-भ्रमण करना ।



भारत भूषण खत्री, गांधी मार्केट, भिण्ड, (म० प्र०), १८ वर्ष, दुर्गा भजन कीर्तन में रुचि और गीत गाना तथा घूमना-फिरना ।



मनोज कुमार थापा, रेलवे कालोनी, ब्लाक न० १०६, एफ जगाधरी वर्कशाप अम्बाला १४ वर्ष, दीवाना पढ़ना व स्कूल में पढ़ना ।



राम प्रकाश ढकाल, दमक भापा, नेपाल, २२ वर्ष, देश विदेश की यात्रा करना, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना तथा फिल्म देखना ।



नरेन्द्र कुमार गर्वानिया, १-११८, शास्त्री नगर, सराय रोहिल्ला दिल्ली-११००५२, १४ वर्ष, दीवाना पढ़ना, लिखना सिनेमा देखना ।



रणबीर सिंह 'सिधू' पुत्र मेहर सिंह 'सिधू' गांव व डाकघर फतेही खेड़ा, जिला फरीदकोट (पंजाब), १७ वर्ष, फिल्में देखना, पेन फ्रेंडस बनाना ।



अशोक कुमार मोदी, सत्यबाबू लेन, मधुपुर, स. प्र. (बिहार) १६ वर्ष, फिल्म देखना, चट-पट खाना और दीवाना पढ़ना व सैर करना ।



अनुप मास्कीम्ब, ठमेल, १२/८६६, काठमाण्डो, (नेपाल), १६ वर्ष, कविता पढ़ना, फिल्म देखना, कहानी लिखना और करांटे खेलना ।



भारत भूषण, राज हैण्डलूम सदर, बाजार, करनाल, १८ वर्ष, सिनेमा देखना, गधे पर बैठना, गरीबों की मदद करना ।



सुनील त्रिखा आर-४३, इन्द्र-पुरी, नई दिल्ली-१२, १६ वर्ष, लड़कियों में कोई दिलचस्पी न रखना, दोस्तों के लिए जान देना, लड़ाई करना ।



श्रवण कुमार अग्रवाल, ३६६ केल टोल काठमाण्डू-६ नेपाल, २० वर्ष, फोटो सहित पत्र-मित्रता तथा गाने गाना, दीवाना पढ़ना ।



रमेश कुमार सचदेव, १२४/१७०, ब्लाक बी, गोविन्दनगर कानपुर-२०८००६, १८ वर्ष, घूमना, फोटोग्राफी करना व क्रिकेट खेलना ।



जगदीश कुमार, ई १० विशाल-मोचन नगर, महापालिका कालोनी वाराणसी, १६ वर्ष, इधर-उधर घूमना, दुकान पर रहना, रेडियो सुनना ।



बी. एम. भाणावत, २०/१६४ चन्दन निवास, राबजी का हाटा, उदयपुर, (राज०), ११ वर्ष, दीवाना पढ़ना तथा लड़कों से पत्र-मित्रता करना ।



मनोहरलाल तेजवानी, मान-पुरा वार्ड हरदा, (म० प्र०), १७ वर्ष, लड़के-लड़कियों से पत्र मित्रता करना, फिल्में देखना, किताबें पढ़ना ।



परमजीत सिंह, ७१/३, राम-नगर, करनाल (हरि०), १२ वर्ष, दिल्ली से पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना, सैर करना ।



[illegible] (बिहार), २० वर्ष, अध्ययन करना, आकर्षक छवि [illegible] देख मुस्कराना ।



[illegible] एम. एन. बनर्जी रोड, (कारिक पुर), २४ परगना, १७ वर्ष, रेडियो सुनना और दोस्तों के साथ घूमना ।



[illegible] किरन, [illegible] कम्पनी, ग-१०७६ पलाटून बी.ई. जी. (और डी) रुड़की २० वर्ष, हर दुर्बल इन्सान की मदद करना ।



कुलदीप वर्मा द्वारा ८ मोटो शाप, हरीचन दत्त लेन, कलकत्ता-७०००१२, २४ वर्ष, मित्रता करना, अच्छी किताबें पढ़ना, बड़ों का आदर करना ।



ललित थापा, बैरागी हाल्मी-टल सोलन, १३ वर्ष, नेपाल जाना परन्तु पासपोर्ट न मिलना, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना ।



रुद्र प्रताप सिंह राठौर द्वारा श्री वीरेन्द्र सिंह राठौर, मो० अहाता निशान सिंह अलीगढ़, १५ वर्ष, दीवाना पढ़ना, फोटो ग्राफी करना ।



प्रभुसिंह [illegible] आश्रम दादा बाड़ी, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, लड़कों से पत्र-व्यवहार अंग्रेजी में, फौजी अफसरों से गप्पें लड़ाना ।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये । मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा । फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें ।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें

नाम ____________
पता ____________
आयु ________ शौक ________

[illegible] प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित ।


पंजाब
भारत का
शस्त्र-बाहु
और अन्न भण्डार
इस ऐतिहासिक
दिवस पर राष्ट्र
का अभिनन्दन
करता है
आज, स्वतंत्रता की ३१ वीं वर्षगाँठ के अवसर पर, भारत का प्रहरी राज्य, पंजाब, एक बार फिर देशवासियों की सेवा का व्रत लेता है । मातृभूमि की रक्षा के लिए पंजाब की भूमिका उतनो हो गौरवशालो रही है जितनो राष्ट्र के लिए खाद्यान्न देने की । पंजाब अपने ईमानदार और परिश्रमी नागरिकों पर, जिनके लिए कोई भी कार्य कठिन नहीं गर्व अनुभव करता है ।
PRD
जन सम्पर्क विभाग पंजाब द्वारा प्रचारित

ाखिल भारतीय
ैमल
ा-प्रतियोगितामें
ाग लीजिए।



चित्र प्रतियोगिताओं में २००० के १४ लाख विद्यार्थियों ने लिया है. इसीसे उत्साहित होकर हम आयोजित कर रहे हैं सबसे प्रतियोगिता.

बनाने में आपकी अनूठी प्रतिमा म्लिन कद्र करती है. भारत में कहीं भी रहते हो, किसी भी स्कूल ते हों कैम्लिन आपके पास घड़ियों, अलार्म घड़ियों जैसे अनेक पुरस्कारों के साथ पहुंचेगी. हमारी तियोगिता में भाग लीजिए.

सर्वोत्तम चित्र बनाइए. संभव है हमारे ७०० पुरस्कारों के विजेताओं में आप भी हों.

चित्र बनाने के लिए हम आपके ६ प्रिय विषय सुझाते हैं. खेल-कूद, त्योहार, पंछी, तितलियां, फूल और पशु! इस प्रतियोगिता में पुरस्कार जीतने के लिए आप में से कोई भी बहुत छोटा या बड़ा नहीं है, कक्षा के अनुसार हमने पहले ही तीन समूह बना दिये हैं.

क) पूर्व प्राथमिक से कक्षा ४
ख) कक्षा ५ से कक्षा ८
ग) कक्षा ९ से कक्षा ११

प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए कोई शुल्क नहीं है. आपको अपने बनाये चित्र के साथ बस एक एंट्री कूपन भेजना होगा. यह कूपन प्रतियोगिता के नियमो के साथ स्टूडेंट्स एंड आर्टिस्ट्स वाटर कलर केक्स, स्टूडेंट्स वाटर कलर ट्यूब्स, पोस्टर कलर ट्रायल पेक्स और ऑयल पेस्टलस के साथ मिलते हैं.

कैम्लिन प्राईवेट लिमिटेड
आर्ट मटीरियल डिव्हीजन
अंधेरी, बम्बई-४०० ०५९

३०,००० रु. मूल्य के ७०० पुरस्कार!



ही अपने लिए कैमल कलर दिए.

ोगिता अवधिः
-सितम्बर, १९७८.

VISION 784 HIN

15 अगस्त

यह दिन है हर्षोल्लास का—अपनी मान्यताओं और आदर्शों पर पुनः चलते रहने की प्रतिज्ञा करने का।

यह दिन हमें स्मरण दिलाता है :

—उस स्वतंत्रता संग्राम की, जो महात्मा गांधी के नेतृत्व में हमने लड़ा;

—हमारे लाखों-करोड़ों देशवासियों के त्याग और कष्टों की;

—स्वतंत्रता को सुदृढ़ बनाने की, देश के एकीकरण की और आर्थिक विकास की नींव डालने की।

आज हम पुनः संकल्प करते हैं :

—अपने बीच में से बेरोजगारी, बीमारी और निरक्षरता को मिटाने का;

—अपने 5 लाख 76 हजार गांवों में रहने वाले लोगों के लिए पीने के पानी, स्वास्थ्य, शिक्षा और सड़कों की न्यूनतम आवश्यकताएं पूरी करने का;

—देश के कमजोर वर्गों को भी देश के सामाजिक व आर्थिक विकास में समान रूप से भागीदार बनाने का।

स्वतंत्रता की 31वीं वर्षगांठ के अवसर पर आइए हम संकल्प करें गांधीजी के सपनों का भारत बनाने का। आइए हम चेष्टा करें हर आंख से आंसू पोंछने की।



davp 78/206